प्रयागराज, रविवार 14 जून 2026 से 20 जून 2026 तक
वर्ष-14, अंक-24
पृष्ठ- 8 मूल्यः 3 रूपये
आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार
हिन्दी साप्ताहिक

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

यूएस ने ईरानी रडार साइट्स पर हमला किया,ईरान ने कुवैत-बहरीन पर बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं, आखिर कब रुकेगी जंग?

तेहरान। अमेरिका ने कहा है कि उसकी सेना ने गोरुक और केश्म आइलैंड पर ईरानी रडार साइट्स पर हमला किया। अमेरिकी सेंट्रल कमांड (र्एंऊण्ध्श्) के मुताबिक, पहले होर्मुज में ईरान के 4 अटैक ड्रोन मार गिराए गए, फिर आगे के हमले रोकने के लिए रडार साइट्स को निशाना बनाया गया। इसके जवाब में ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड्स (आईआरजीसी) ने कहा कि उसने होर्मुज स्ट्रेट के पास दुश्मन ठिकानों पर मिसाइल हमला किया। वहीं, र्एंऊण्ध्श् के मुताबिक ईरान ने कुवैत और बहरीन की ओर 7 बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं, जिनमें 6 को हवा में ही रोक दिया गया, जबकि सातवीं अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकी। इस बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि अमेरिकी हमलों के बाद ईरान की मिसाइल क्षमता काफी कमजोर हो गई है और उसके पास सिर्फ 21-22फीसदी मिसाइलें बची हैं। हालांकि, न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिकी खुफिया एजेंसियों का मानना है कि ईरान ने अपनी 33 में से 30 मिसाइल साइट्स फिर से चालू कर ली हैं और उसके पास अब भी करीब 70फीसदी मिसाइल भंडार मौजूद है। जंग को लेकर पूरी दुनिया के माथे की शिकन काम नहीं हो रही.जंग कब ख़त्म होगी कहना मुश्किल हैं महीनो से दो देश

अमेरिका और ईरान अपनी अपनी शर्तो पे अड़े हैं हालांकि ट्रम्प युद्ध को जल्दी ख़त्म करना चाहते हैं। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स-ट्रम्प बोले- ईरानी सुप्रीम लीडर से मुलाकात संभवः अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि अगर अमेरिका-ईरान डील होती है तो वे ईरान के सुप्रीम लीडर से मिलने को तैयार हैं। उन्होंने यह भी बताया कि ईरान से एनरिच्ड यूरेनियम लेने के लिए सेना भेजने पर विचार हुआ था, लेकिन ज्यादा जोखिम होने के कारण प्लान रद्द कर दिया गया। ईरान ने 2 हजार से ज्यादा कैदियों को राहत दीः ईरान के सुप्रीम लीडर मुजतबा खामेनेई ने 2,000 से ज्यादा कैदियों की सजा माफ या कम करने को मंजूरी दी। जासूसी और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मामलों में सजा काट रहे कैदियों को इस राहत में शामिल नहीं किया गया है। लेबनान में इजराइली हमले जारीः सीजफायर की बातचीत के बावजूद दक्षिणी लेबनान में इजराइल के हवाई हमले जारी है। कई इलाकों में स्ट्राइक हुईं, जिनमें कम से कम 4 लोगों की मौत और कई घायल हुए। ईरान का तेल निर्यात बुरी तरह गिराः अमेरिकी नाकेबंदी के बाद मई में ईरान का कच्चे तेल का निर्यात 84फीसदी तक गिर गया। लॉयड्स लिस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक अब ईरान बड़े टैंकरों की जगह छोटे जहाजों से तेल भेज रहा है, ताकि अमेरिकी कार्रवाई से बचा जा सके। आयरलैंड ने इजराइली मंत्रियों पर बैन लगायाः आयरलैंड ने इजराइल के दो कट्टरपंथी मंत्रियों इतामार बेन-ग्वीर और बेजालेल स्मोट्रिच के देश में प्रवेश पर रोक लगा दी। आयरलैंड सरकार ने कहा कि दोनों नेताओं के बयान फिलिस्तीनियों के खिलाफ नफरत और हिंसा को बढ़ावा देने वाले रहे हैं।सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका और ईरान के बीच संभावित शांति समझौता इस बात पर टिका है कि ट्रम्प प्रशासन ईरान की फ्रीज की गई 24 अरब डॉलर (करीब 2.29 लाख करोड़ रूपए) की संपत्ति जारी करता है या नहीं। ईरान के सुप्रीम लीडर के सैन्य सलाहकार मोहसिन रेजाई ने कहा, 'बातचीत अड़चन में फंसी है और इसे खत्म करना ट्रम्प के हाथ में है। गेंद अब ट्रम्प के पाले में है।' रिपोर्ट के अनुसार, ईरान चाहता है कि अंतरिम समझौते पर हस्ताक्षर होते ही 12 अरब डॉलर जारी किए जाएं, जबकि बाकी 12 अरब डॉलर बाद में दिए जाएं। वहीं अमेरिकी अधिकारियों को डर है कि अभी फंड जारी करने से ईरान पर बना दबाव कमजोर पड़ जाएगा।

जयशंकर बोले- अमेरिका ने खुद रूसी तेल खरीदने को कहा, और फिर बाद में टैरिफ लगा दिया

नयी दिल्ली। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने रूस से तेल

खरीदने के फैसले का बचाव करते हुए कहा है कि 2022 में रूस-यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद अमेरिका ने खुद भारत से रूसी तेल खरीदने की अपील की थी ताकि वैश्विक तेल बाजार स्थिर रहे और कीमतों में बेतहाशा उछाल न आए। फिनलैंड में एक कार्यक्रम के दौरान जयशंकर ने कहा कि रूस पर बैन लगाए जाने के बाद यूरोपीय देशों ने रूसी तेल से दूरी बना ली और पश्चिम एशिया से बड़ी मात्रा में तेल खरीदना शुरू कर दिया। पश्चिम एशिया लंबे समय से भारत के लिए तेल का प्रमुख स्रोत रहा है। ऐसे में बाजार की स्थिति बदल गई। जयशंकर ने कहा, 'उस समय अमेरिका ने खास तौर पर भारत से कहा था कि वह रूसी तेल खरीदे ताकि तेल बाजार स्थिर रह सके।' उन्होंने कहा कि भारत ने हालात को देखते हुए व्यावहारिक फैसला लिया और सस्ता तेल खरीदा। जयशंकर ने पश्चिमी देशों के रवैये पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि पहले अमेरिका ने भारत से बाजार को स्थिर करने में मदद मांगी, बाद में टैरिफ लगाए और फिर उन्हें वापस भी ले लिया। इससे पता चलता है कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में फैसले हमेशा आदर्शों, नैतिकता या सिद्धांतों के आधार पर फैसले नहीं लिए जाते हैं।

आम ग्राहक एक दिन में अधिकतम 200 लीटर ही डीजल खरीद पाएंगे

नयी दिल्ली। आम ग्राहक एक दिन में अधिकतम 200 लीटर ही डीजल खरीद पाएंगे।

इस डीजल को दोबारा बेचने पर पूरी तरह रोक रहेगी। इसके अलावा अब फैक्ट्रियों और कॉमर्शियल यूजर्स को रिटेल आउटलेट से ईंधन नहीं मिलेगा।

केंद्र सरकार ने 11 जून 2026 को इसे लेकर आदेश जारी किया है।

अब इन बड़े उपभोक्ताओं को केवल बल्क सेल पॉइंट्स से ही ईंधन खरीदना होगा।

सरकार ने यह कदम देश के कुछ हिस्सों में रिटेल पंपों पर अचानक बढ़ी असामान्य बिक्री को देखते हुए उठाया है। यह पाबंदी शुरुआती तौर पर 90 दिनों के लिए लागू की गई है।

सरकार का कहना है कि इस फैसले से आम उपभोक्ताओं के लिए ईंधन की किल्लत नहीं होगी। पेट्रोलियम मंत्रालय ने 'मोटर स्पिरिट एंड हाई स्पीड डीजल (टेंपररी रेगुलेशन ऑफ सप्लाई थ्रू रिटेल आउटलेट्स) ऑर्डर, 2026' जारी किया है।

नेपाल बोला- भारत से सीमा विवाद में किसी तीसरे की जगह नहीं

काठमांडू। नेपाल के विदेश मंत्री शिशिर खनाल ने कहा कि भारत-नेपाल सीमा का मुद्दा पूरी तरह

द्विपक्षीय है और इसका समाधान दोनों देश आपसी बातचीत से ही करेंगे। इसमें किसी तीसरे पक्ष की कोई भूमिका नहीं है। हाल ही में नेपाली पीएम बलेन शाह ने हाल ही में कहा था कि सीमा विवाद से जुड़े मुद्दे में ब्रिटेन की भूमिका हो सकती है। विदेश मंत्री खनाल ने इस पर सफाई देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री का मकसद किसी तीसरे देश की मध्यस्थता मांगना नहीं था। खनाल ने बताया कि दोनों देशों की तकनीकी टीमें सीमा निर्धारण, सीमा स्तंभों के रखरखाव और नो-मैन्स लैंड पर अतिक्रमण से जुड़े मामलों की संयुक्त जांच कर रही हैं।इससे पहले भारत ने भी साफ कहा था कि सीमा से जुड़े सभी मुद्दों के लिए दोनों देशों के बीच पहले से तंत्र मौजूद हैं और इसमें किसी तीसरे पक्ष की जरूरत नहीं है। भारत के विदेश मंत्रालय ने बताया था कि करीब 98फीसदी भारत-नेपाल सीमा का निर्धारण हो चुका है, जबकि कुछ हिस्सों पर काम जारी है।

केंद्र सरकार, असम व नागालैंड के बीच समझौता, अगले साल एक-दो राज्यों को छोड़ पूरे पूर्वोत्तर से हटेगा अफस्पा

नयी दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गुरुवार को पूर्वोत्तर भारत को लेकर दो बड़े ऐलान किए। उन्होंने कहा कि 2027 तक एक-दो

राज्यों को छोड़कर पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र से सशस्त्र बल (विशेष शक्तियां) अधिनियम (अफस्पा) हटा लिया जाएगा। शाह ने कहा कि अफस्पा के दायरे में लगातार हो रही कमी इस बात का संकेत है कि क्षेत्र में शांति लौट रही है। इसके अलावा केंद्र सरकार, असम और नागालैंड के बीच सीमा विवाद वाले इलाके में लंबे समय से बंद पड़े तेल और गैस उत्पादन को फिर से शुरू करने पर सहमति बनी है। अमित शाह ने कहा कि इस समझौते से तेल उत्पादन क्षमता मौजूदा 1,000-1,500 बैरल प्रतिदिन से बढ़कर करीब 10 गुना हो सकती है। उन्होंने बताया कि एक तेल क्षेत्र से 15,000 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य का तेल और गैस मिलने का अनुमान है।पश्चिम बंगाल पुलिस ने शुक्रवार को हुगली जिले के तारकेश्वर में टीएमसी के पूर्व विधायक रामेंदु सिंह रॉय के घर के पास स्थित एक कॉलेज परिसर में छापा मारा। यहां से पुलिस ने भारी मात्रा में सरकारी राहत सामग्री बरामद की। इसे मुख्य रूप से पूर्वोत्तर भारत (जैसे असम, नागालैंड, मणिपुर और अरुणाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों) और जम्मू-कश्मीर के अशांत क्षेत्रों में लागू किया जाता है। सशस्त्र बलों को प्राप्त विशेष अधिकारइस कानून के तहत सुरक्षा बलों को निम्नलिखित असाधारण अधिकार प्राप्त होते हैंःबिना वॉरंट गिरफ्तारीः किसी भी व्यक्ति को संज्ञेय अपराध करने या उसका संदेह होने पर बिना वॉरंट गिरफ्तार किया जा सकता है। तलाशी और जब्तीः सुरक्षा बल बिना किसी वॉरंट के किसी भी परिसर में प्रवेश कर सकते हैं और तलाशी ले सकते हैं।गोली चलाने की शक्तिः सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए कानून तोड़ने वालों या चेतावनी का उल्लंघन करने वालों पर बल प्रयोग किया जा सकता है, यहाँ तक कि गंभीर परिस्थितियों में जानलेवा गोली भी चलाई जा सकती है।

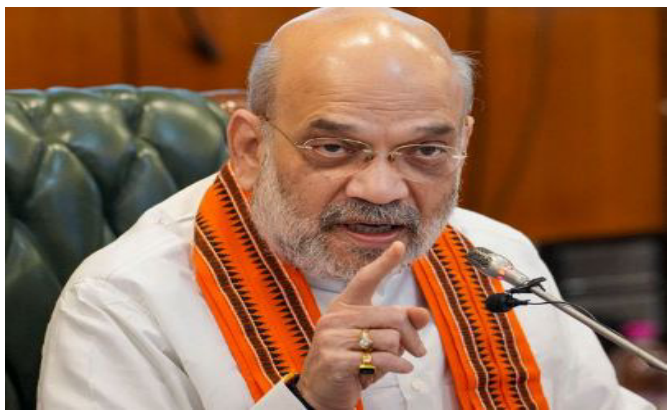

ट्रम्प का दावा- ईरान के सुप्रीम लीडर को डील मंजूर,नए हमले रद्द, ईरान ने खारिज किया, बोला- मनगढ़ंत

तेहरान। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि ईरान के सुप्रीम लीडर मुजतबा खामेनेई

ने नई डील पर मंजूरी दे दी है। व्हाइट हाउस में एक रिपोर्टर से बात करते हुए ट्रम्प ने कहा, 'नई डील के मुताबिक ईरान ने मंजूर किया है कि वह कभी भी परमाणु हथियार नहीं रखेगा और डील होते ही होर्मुज स्ट्रेट को भी खोल दिया जाएगा।' हालांकि ईरान की सरकारी मीडिया ईराना के मुताबकि, विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बघई ने इस दावे को खारिज करते हुए कहा कि समझौता साइन होने की खबरें सिर्फ अटकलें हैं और अभी तक कोई अंतिम फैसला नहीं हुआ है। इससे पहले, ट्रम्प ने ईरान पर शुक्रवार को भीषण बमबारी करने और उसके तेल निर्यात के मुख्य केंद्र खार्ग द्वीप पर कब्जा करने की धमकी दी थी। इसके बाद उन्होंने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि अमेरिका ने ईरान के खिलाफ नए हवाई हमले और बमबारी रद्द कर दी हैं। उन्होंने फैसला बदलने की वजह ईरानी नेतृत्व से बातचीत को सबसे ऊंचे स्तर पर पहुचंना बताया। हालांकि, ट्रम्प ने यह भी साफ किया कि जब तक समझौता पूरी तरह तय नहीं हो जाता, तब तक होर्मुज स्ट्रेट पर अमेरिकी नाकेबंदी लागू रहेगी। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स-भारत ने अमेरिकी हमलों पर कड़ा विरोध दर्ज करायाः भारतीय क्रू वाले जहाज एमटी जलवीर पर हमले के बाद भारत ने अमेरिकी राजदूत को तलब किया और जहाजों पर हमले तुरंत रोकने की मांग की। हमलों में 3 भारतीय नाविकों की मौतः ओमान के पास जहाजों पर हमलों में भारतीय नाविक प्रभावित हुए। एमटी सेत्तेबेल्लो हमले में 3 भारतीयों की मौत की पुष्टि हुई, जबकि एमटी जलवीर पर मौजूद सभी 20 भारतीय सुरक्षित बताए गए हैं। होर्मुज स्ट्रेट को लेकर तनाव बरकरारः ईरान ने चेतावनी दी कि उसके तेल-गैस ठिकानों पर हमला हुआ तो किसी को भी तेल नहीं मिलेगा। दूसरी ओर अमेरिका ने दावा किया है कि होर्मुज स्ट्रेट अभी भी जहाजों के लिए खुला है। अमेरिका-ईरान के बीच बैकचैनल बातचीत तेजः रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक, दोनों देश ईरान के 6 से 12 अरब डॉलर के फंसे हुए फंड जारी करने के मुद्दे पर बातचीत कर रहे हैं। रूस, चीन और कतर सक्रिय हुएबढ़ते तनाव के बीच रूस और चीन ने अमेरिका-ईरान से सैन्य कार्रवाई रोककर बातचीत का रास्ता अपनाने की अपील की, जबकि कतर ने भी तनाव कम कराने के लिए अपना प्रतिनिधिमंडल तेहरान भेजा।

अन्नामलाई की नई पार्टी से 10 लाख से अधिक लोग जुड़े,समर्थन में तमिलनाडु बीजेपी उपाध्यक्ष ने भी इस्तीफा दिया

चेन्नई। तमिलनाडु भाजपा के पूर्व अध्यक्ष के अन्नामलाई की नई पार्टी 'इधु नम्मा इयक्कम' को शुरुआत में ही बड़ा जनसमर्थन मिलने का दावा किया गया है। अन्नामलाई के अनुसार, आंदोलन शुरू होने के 10 घंटे के भीतर 10 लाख से ज्यादा लोगों ने रजिस्ट्रेशन कराया है। अन्नामलाई ने इसे लोगों का आंदोलन बताते हुए कहा कि यह राज्य के भविष्य को लेकर साझा सोच और मिशन का प्रतीक है। अन्नामलाई ने 2 जून को भाजपा की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। इसकी चिट्ठी शुक्रवार को सामने आई। अन्नामलाई के समर्थन में भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष करु नागराजन ने भी पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने पत्रकारों से बातचीत में कहा- मैंने और कई भाजपा नेताओं ने अन्नामलाई का समर्थन करने का फैसला किया है। अन्नामलाई ने भाजपा से इस्तीफा देने के बाद 5 जून को नई पार्टी बनाने की घोषणा की। सोशल मीडिया पर वीडियो मैसेज में कहा, 'आज हम अपना स्वतंत्र आंदोलन खड़ा कर रहे हैं। हमारी पार्टी तमिलनाडु में 2031 का विधानसभा चुनाव लड़ेगी।' उन्होंनs 'We The Leaders' नाम से नया प्लेटफॉर्म और wetheleader.org वेबसाइट भी लॉन्च की। इसके साथ ही कोयंबटूर में एपीजे अब्दुल कलाम सेंटर फॉर इथिक्स एंड पॉलिटिक्स संस्थान भी स्थापित करने की घोषणा की है। अन्नामलाई कर्नाटक कैडर के आईपीएस अधिकारी रहे हैं। अन्नामलाई बोले- बदलाव, आम आदमी की राजनीति करेंगे, 5 बातेंः- मेरा मकसद तमिलनाडु में बदलाव लाना और

राजनीति के तौर-तरीकों को बेहतर बनाना था। जनता दशकों से चली आ रही आम राजनीति से ऊब गई है। बदलाव चाहती है। आलाकमान से मतभेद थे। मेरे-उनके विचार एक जैसे नहीं रहे। मैं उस सोच को बदलना चाहता था, जिसके अनुसार राजनीति रईसों और कुछ खास लोगों के लिए है, आम ?आदमी के लिए नहीं। मेरे आंदोलन का उद्देश्य व्यक्ति पूजा और सत्ता में परिवारवाद को खारिज कर सियासी तस्वीर बदलना है। इस आंदोलन का उद्देश्य मौजूदा पार्टियों से कम्पिटीशन किए बिना लोगों की जरूरतों को प्राथमिकता देना है। यह तय करना मुश्किल था कि भाजपा में रहूं या तमिल लोगों से जुड़ा रहूं। मैंने 4 दिसंबर 2025 को पार्टी को बताया कि मैं इस्तीफा दूंगा। राज्य की जनता कई दशकों से चली आ रही आम राजनीतिक चर्चाओं से ऊब चुकी थी और बदलाव चाहती थी। पिछले दशक में कई बार बदलाव की लहरें उठीं, लेकिन वे टिक नहीं पाईं। अन्नामलाई आईपीएस अधिकारी, छह साल भाजपा में रहे-अन्नामलाई कर्नाटक कैडर के आईपीएस अधिकारी रहे हैं। नौकरी छोड़कर 2020 में भाजपा से जुड़े। पार्टी ने पहले प्रदेश उपाध्यक्ष और फिर अध्यक्ष बनाया। उन्होंने तमिलनाडु में भाजपा को मजबूती दी। वे आक्रामक राजनीति के कारण लोकप्रिय हुए। राज्य प्रमुख पद से हटाए जाने और एआईएडीएमके के साथ भाजपा के गठबंधन से नाराज थे। तमिलनाडु में इसी साल विधानसभा चुनाव हुए। 4 मई को आए रिजल्ट में एक्टर विजय की 2 साल पुरानी पार्टी टीवीके को 108 सीटें मिलीं। टीवीके ने कांग्रेस और अन्य छोटी पार्टियों के साथ मिलकर राज्य में पहली बार सरकार बनाई। डीएमके को 59 और एआईडीएमके को 47 सीटों पर जीत मिली। एआईडीएमके के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ने वाली भाजपा ने 27 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे। लेकिन सिर्फ एक सीट पर जीत हासिल कर सकी थी। चुनावी नतीजों के बाद से ही अन्नामलाई के पार्टी छोड़ने की चर्चाएं शुरू हो गई थीं।

ममता की हार के 14 दिन बाद ही टीएमसी टूटी, बागियों का 18 मई को स्पीकर को भेजा लेटर सामने आया जिसमे 19 सांसदों के दस्तखत

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस यानी टीएमसी में फूट ममता की हार के 14 दिन बाद ही शुरू हो गई थी। बंगाल विधानसभा चुनाव का रिजल्ट 4 मई को आया था। न्यूज एजेंसी एएनआई के मुताबिक 18 मई को 19 सांसदों ने बगावत करते हुए लोकसभा स्पीकर को लेटर लिखा था। बागी सांसदों ने अलग गुट बनाने की मांग की है। स्पीकर को भेजी गई चिट्ठी में जिन 19 सांसदों ने साइन किए थे, वह लेटर अब सामने आया है। इनमें यूसुफ पठान, सायोनी घोष, काकोली घोष दस्तीदार और शताब्दी रॉय जैसे बड़े नाम शामिल हैं।

सूत्रों के मुताबिक, कुल 20 सांसदों ने बगावत की है। एक नाम जो बचा है, वो बड़ा नेता है। जल्द ही उनका नाम भी सामने आ जाएगा। टीएमसी के लोकसभा में कुल 28 सांसद हैं। दावा किया जा रहा है कि 20 सांसद ममता से अलग हो गए हैं। टीएमसी के लोकसभा सांसदों के अलावा राज्यसभा सांसद भी टूट रहे हैं। पिछले 4 दिनों में चार राज्यसभा सांसद इस्तीफा दे चुके हैं। 8 जून को सुखेंदु शेखर ने सदस्यता के साथ पार्टी छोड़ी। फिर 10 जून को सुष्मिता देव अलग हो गईं। 11 जून को प्रकाश चिक और कोयल मलिक ने इस्तीफा दे दिया। 8 जून को टीएमसी के लोकसभा के 28 सांसदों में से 20 ने एनडीए सरकार को समर्थन देने का फैसला किया था। सांसद और टीएमसी की पूर्व नेता काकोली घोष दस्तीदार ने कहा था कि सांसदों के साइन वाला पत्र लोकसभा स्पीकर ओम बिरला को भेज दिया है। इसमें अलग संसदीय ब्लॉक के रूप में अलग बैठने की व्यवस्था की मांग भी की गई। ममता के पास अब सिर्फ 22 विधायक और 18 सांसद बचे-टीएमसी के पास कुल 28 लोकसभा सांसद थे, जिसमें से 20 अलग हो गए हैं। अब लोकसभा में ममता के पास सिर्फ 8 सांसद बचे हैं। राज्यसभा की बात करें तो 13 में से 4 सांसद इस्तीफा दे चुके हैं यानी सिर्फ 9 राज्यसभा सांसद बचे हैं। विधानसभा की बात करें तो टीएमसी ने इस बार के चुनाव में 80 सीटें जीती थीं। जिसमें से 58 विधायक अलग गुट बना चुके हैं। ममता के पास सिर्फ 22 विधायक बचे हैं। टीएमसी में फूट के बाद आगे क्या हो सकता है 9 संभावनाएं-कानूनी लड़ाई तेज होगीः ममता गुट और बागी गुट विधानसभा, चुनाव आयोग और अदालतों में अपनी-अपनी वैधता साबित करने की कोशिश करेंगे। दल-बदल कानून की परीक्षाः बागी विधायकों के पास दो-तिहाई संख्या होने का दावा है, इसलिए उनकी मान्यता पर बड़ा कानूनी विवाद हो सकता है। संगठन में और टूट-फूट संभवः कुछ विधायक, सांसद और जिला स्तर के नेता भी पक्ष चुन सकते हैं, जिससे दोनों गुटों की ताकत बदल सकती है। ममता बनर्जी डैमेज कंट्रोल करेंगीः असंतुष्ट नेताओं को मनाने, संगठन में बदलाव और नए चेहरों को आगे लाने की कोशिश हो सकती है। भाजपा और कांग्रेस नजर बनाए रखेंगीः विपक्षी दल टीएमसी के संकट का राजनीतिक फायदा उठाने की कोशिश कर सकते हैं। स्थानीय निकाय और उपचुनावों पर असरः अगर फूट गहरी हुई तो आने वाले चुनावों में टीएमसी के वोट बैंक और संगठन पर असर पड़ सकता है।

असम के जोरहाट में वायुसेना का ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट क्रैश-एएन-32 विमान में लैंड करते ही लगी आग, दो हिस्सों में टूटा

असम। असम में जोरहाट के रौरिया एयरबेस पर शनिवार सुबह लैंडिंग के दौरान एक सैन्य विमान क्रैश हो गया। हादसा उस समय हुआ, जब विमान एयरबेस पर उतरने की कोशिश कर रहा था। हादसे के बाद उसमें आग लग गई

और दो हिस्से में टूट गया। यह एएन-32 मालवाहक विमान था, जिसका इस्तेमाल सैनिकों और सामान की ढुलाई के लिए किया जाता है। दुर्घटना में पायलट के जान गंवाने की आशंका जताई जा रही है। भारतीय वायुसेना ने कहा कि मामले में विस्तृत जानकारी का इंतजार है। भारतीय वायु सेना के पास लगभग 100 एंटोनोव एएन-32 टैक्टिकल ट्रांसपोर्ट विमानों का बेड़ा है। हालांकि आईएएफ ने शुरू में सोवियत मूल के ऐसे 125 प्लेन खरीदे थे, लेकिन अब एक्टिव-ड्यूटी प्लेन की संख्या लगभग 100 रह गई है। एएन-32 ने 1980 से आईएएफ की मीडियम-लिफ्ट ट्रांसपोर्ट क्षमताओं की रीढ़ के तौर पर काम किया है। गर्म मौसम और हिमालय जैसे ऊंचे इलाकों में ऑपरेशन के दौरान इसकी मजबूती के कारण इसे काफी अहम माना जाता है।

'धरती का फेफड़ा' हैं पेड़-पौधे, पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधारोपण बेहद जरुरी - पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

'विश्व पर्यावरण दिवस' पर पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने पर्यावरण अनुकूल जीवन शैली अपनाने व प्राकृतिक संसाधन बचाने के लिए किया प्रेरित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) कानपुर। बीते शुक्रवार को पर्यावरण संरक्षण आज की सबसे बड़ी जरुरत है, आने वाली पीढ़ी को जीवित रहने के लिए शुद्ध

आक्सीजन मिले इसके लिए ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाएं व परिवार के सदस्य की भांति उसकी देखभाल करें। वैश्विक स्तर पर निरंतर बढ़ रहे तापमान को भी हम इन्हीं पेड़-पौधों के जरिये नियंत्रित कर सकते हैं। उक्त उद्गार उत्तर गुजरात परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने 'विश्व पर्यावरण दिवस' पर सपरिवार पौधारोपण करने के पश्चात व्यक्त किये। पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि, प्रकृति हमारा घर है, इसकी रक्षा करना हमारा धर्म है। धरती पर पेड़ के बिना मानव जीवन की कल्पना करना असंभव है। पेड़ से हमें न सिर्फ ऑक्सीजन मिलता है बल्कि तमाम जीवनदायक चीजें मिलती हैं। इसीलिए पेड़ को 'धरती का फेफड़ा' भी कहा जाता है। श्री यादव ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं, बल्कि एक वैश्विक आंदोलन है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि पृथ्वी केवल हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए नहीं है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की भी धरोहर है। वर्ष 2026 में इस दिवस का केंद्र बिंदु जलवायु परिवर्तन और प्रकृति आधारित समाधान हैं। दुनिया भर में बढ़ते तापमान, अनियमित मौसम, सूखा, बाढ़ और प्राकृतिक आपदाएं यह संकेत दे रही हैं कि अब कार्रवाई का समय आ गया है। विश्व पर्यावरण दिवस का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव विविधता संरक्षण और सतत विकास जैसे मुद्दों पर वैश्विक कार्रवाई को प्रोत्साहित करना है। पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि सिर्फ दिवस विशेष पर वृक्षारोपण से बात नहीं बनेगी बल्कि हमें हर दिन पर्यावरण दिवस की तरह जागरूक रहना होगा तथा हर माह पौधा के प्रति जागरूक करने और हर डाककर्मी से पौधारोपण द्वारा उनके निवारण में भागीदार बनने का एवं इको फ्रेंडली उत्पादों का इस्तेमाल करने को भी प्रेरित किया। सिंगल-यूज प्लास्टिक का कम उपयोग, पानी और बिजली की बचत, सार्वजनिक परिवहन या साइकिल का उपयोग जैसी पहलों से पर्यावरण संरक्षण की शुरुआत व्यक्तिगत स्तर से भी की जा सकती है। प्रवर डाक अधीक्षक श्री चिराग मेहता ने कहा की पर्यावरण संरक्षण के लिये पौधे लगाना हम सबका दायित्व है ह सहायक निदेशक अल्पेश शाह ने एक व्यक्ति, एक वृक्ष के नारे के साथ पौधारोपण के महत्त्व को बताया। सहायक निदेशक रितुल गाँधी और वारिस व्होरा ने कहा कि वृक्ष हमें जीवन देता है इसलिए वृक्ष लगाने के साथ-साथ इनका संरक्षण भी बहुत जरुरी है।

रूबी ने बच्चों के साथ मनाया जन्मदिन, सेक्टर 12 बांटी खुशियां और मुस्कानें

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। उज्जवल उन्नति के बच्चे में उस समय खुशी का माहौल बन गया जब रूबी जी ने अपना जन्मदिन झुग्गी- झोपड़ियों में रहने वाले बच्चों के साथ मनाया। इस अवसर पर बच्चों के साथ केक काटा गया, उन्हें मिठाइयाँ एवं उपहार वितरित किए गए तथा सभी ने मिलकर जन्मदिन की खुशियाँ साझा कीं। रूबी जी का कहना है कि बड़े-बड़े रेस्टोरेंटों और पार्टियों में हजारों रुपये खर्च करने से कहीं अधिक सुकून और खुशी जरूरतमंद बच्चों के साथ समय बिताने में मिलती है। उन्होंने कहा कि बच्चों के चेहरों पर आई

मुस्कान उनके लिए सबसे बड़ा उपहार है। ऐसे बच्चे, जिन्हें अक्सर जीवन में खुशियों के अवसर कम मिलते हैं, उनके साथ जन्मदिन मनाना एक यादगार और भावुक अनुभव रहा। उन्होंने लोगों से भी अपील की कि अपने विशेष अवसरों को समाज के वंचित और जरूरतमंद लोगों के साथ साझा करें, ताकि खुशियों का दायरा और बड़ा हो सके। जन्मदिन को जरूरतमंद बच्चों के साथ मनाने की यह पहल समाज में संवेदनशीलता, प्रेम और मानवता का सुंदर संदेश देती है।

डीएम-एसपी ने तहसील सदर में सम्पूर्ण समाधान दिवस में फरियादियों की सुनी समस्याएं,शिकायतों का समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण से निस्तारण कराए अधिकारी - डीएम

सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 87 शिकायतें आयी, 07 का मौके पर हुआ निस्तारण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)रायबरेली। शनिवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में तहसील सदर में सम्पूर्ण समाधान दिवस का

आयोजन किया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि जन सामान्य की शिकायतों का स्थानीय स्तर पर समाधान किया जाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है जिसके क्रम में तहसील व थानों में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया जाता है। इसमें स्थानीय नागरिक उपस्थित होकर अपनी समस्याओं का समाधान करा सकते हैं। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी अधिकारी जनता की इन शिकायतों का निस्तारण त्वरित एवं समयबद्ध तरीके से एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि शिकायतों के निस्तारण में यदि कोई समस्या है तो उसका कारण स्पष्ट करते हुए अवगत कराना सुनिश्चित किया जाये। जिलाधिकारी ने बताया कि तहसील सदर में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में राजस्व विभाग 59, पुलिस विभाग 17, विकास विभाग 08 व अन्य विभाग 03 कुल 87 प्रकरण प्राप्त हुए, जिसमें से 07 प्रकरणों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। शेष प्रकरणों के निस्तारण हेतु संबंधित विभागों को इस निर्देश के साथ उपलब्ध करा दिये गये कि उनका निस्तारण एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित कराए। पुलिस अधीक्षक रवि कुमार ने भी पुलिस से संबंधित मामलों को सुना और संबंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 नवीन चन्द्रा, उपजिलाधिकारी सदर गौतम सिंह, तहसीलदार सदर आकृति श्रीवास्तव सहित संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

25वीं अंतर वाहिनी पीएसी पूर्वी जोन कंप्यूटर, एंटी सैवोटॉज चेक, विधि विज्ञान, पुलिस फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी एवं डॉग स्क्वायड प्रतियोगिता का समापन समारोह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नैनी/प्रयागराज। दिनांक 03.06.2026 से 05.06.2026 तक आयोजित 25वीं अंतर वाहिनी पीएसी पूर्वी जोन कंप्यूटर, एंटी

सैवोटॉज चेक, विधि विज्ञान, पुलिस फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी एवं डॉग स्क्वायड प्रतियोगिता का सकुशल समापन मुख्य अतिथि पुलिस उपमहानिरीक्षक पीएसी कानपुर अनुभाग कानपुर श्री अतुल शर्मा(आईपीएस) महोदय द्वारा वाहिनी सभागार में किया गया। इस प्रतियोगिता मे पीएसी पूर्वी जोन की 42वीं वाहिनी, 04वी वाहिनी, 12वीं वाहिनी, 20वीं वाहिनी, 33वीं वाहिनी, 34वीं वाहिनी, 36वीं वाहिनी, 37वीं वाहिनी, 39वीं वाहिनी, 48वीं वाहिनी कुल 10 वाहिनी के प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। सर्वप्रथम मुख्य अतिथि महोदय के आगमन पर आयोजन सचिव/सेनानायक श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव (आईपीएस) द्वारा ट्रीपॉट देकर स्वागत किया गया। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर महोदय द्वारा पौधारोपण किया गया। तत्पश्चात समस्त टीम प्रबंधक से परिचय प्राप्त कर सभी खेलों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को महोदय द्वारा पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। सैम हिग्गिनबॉटम इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर, टेक्नोलॉजी एंड साइंसेज के प्रोफेसर(एचओडी) एवं स्टॉफ प्रोफेसर (चयन समिति/निर्णायक मंडल) को महोदय द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। संपूर्ण प्रतियोगिता में 42वीं पीएसी नैनी प्रयागराज ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जिसके उपरांत इस वाहिनी को चल वैजयंती प्रदान किया गया। पीएसी पूर्वी जोन के झंडे को अगली प्रतियोगिता हेतु सम्मानपूर्वक रखा गया। महोदय द्वारा समापन की घोषणा की गई। उपस्थित समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण को सूक्ष्म जलपान कराया गया।

कार्यक्रम के दौरान चतुर्थ वाहिनी पीएसी सेनानायक श्री सर्वेश कुमार मिश्रा, 42वीं वाहिनी पीएसी उपसेनानायक श्री उदय प्रताप सिंह, वाहिनी चिकित्सक डॉ ओम प्रकाश, डॉ प्रवीण कुमार सिंह, शिविरपाल श्री अरविंद कुमार सिंह, सहायक शिविरपाल श्री हरदास, सूबेदार मेजर श्री राधेश्याम यादव एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

सोनभद्र के खनन टेंडर मामले में सुप्रीमकोर्ट का बड़ा फैसला:ज्यादा बोली लगाने वाले को एलओआई जारी करने के हाईकोर्ट के आदेश पर लगाई रोक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। बिल्ली मारकुंडी खनन क्षेत्र के भूमिधरी खनन पट्टों को लेकर 12 जनवरी 2026 को सोनभद्र में कई खनन क्षेत्रों के लिए ई-नीलामी निकाली गई थी। इसमें कांत कंस्ट्रक्शन ने एक पट्टे के लिए और सत्यवीर सिंह की डिवीजन बेंच ने डीएम की ओर से जारी एलओआई (लेटर ऑफ इंटेंट) रद्द कर दिया। कोर्ट ने प्रशासन को याचिकाकर्ता कांत कंस्ट्रक्शन कंपनी और रुद्रा एंटरप्राइजेज के पक्ष में 8 मई 2026 को नया

1051 रुपए प्रति घन मीटर की सबसे ऊंची बोली लगाई थी, जबकि बेस प्राइस 165 रुपए तय था। इसके बाद भी कंपनी की बोली ये कहकर कैंसिल कर दी गई कि उसने एफिडेविट, डिमांड ड्राफ्ट और चालान की हार्ड कॉपी जमा नहीं की। बाद में यही पट्टा 207 रुपए प्रति घन मीटर की बोली लगाने वाली मां दुर्गा माइनिंग वर्क्स को दे दिया गया।इसी तरह दो अन्य पट्टों में 333-333 रुपए की बोलियां कैंसिल कर 201 और 202 रुपए वाली कंपनियों को ठेका दे दिया गया।जिसके बाद मामला हाईकोर्ट में जाने के बाद कोर्ट ने इसे नीलामी प्रक्रिया में हेराफेरी का मामला माना। जस्टिस अरिंदम सिन्हा एलओआई जारी करने का आदेश दे दिया। जिसके बाद माँ दुर्गा माइनिंग वर्क्स ने सुप्रीम कोर्ट में हाईकोर्ट के आदेश को चुनौती देते हुए विशेष अनुमति याचिका दायर कर दिया।जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई करते हुए सभी प्रतिवादियों को नोटिस जारी करते हुए अगली तिथि 3 अगस्त 2026 निर्धारित करते हुए इलाहाबाद हाईकोर्ट द्वारा 8 मई को आदेश किये गए लेटर ऑफ इंटेंट को अगली सुनवाई तक स्थगित कर दिया है।जिसके साथ ही सुप्रीमकोर्ट ने हाईकोर्ट के आदेश पर रोक लगाते हुए अगली सुनवाई 3 अगस्त तक प्रभावी रहने का आदेश दे दिया है।

यूपी के 1.5 लाख से अधिक युवाओं को मिलेगी नि :शुल्क फाइनेंशियल स्किल्स की ट्रेनिंग,यूपीएसडीएमयू और डीडीयू-जीकेवाई के 1000 से अधिक केन्द्रों में कौशल प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे युवा होंगे लाभांवित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। प्रदेश के युवाओं को हुनरमंद बनाकर रोजगार से जोड़ना ही अब योगी सरकार का लक्ष्य नहीं है, बल्कि अपनी प्राथमिकताओं का दायरा बढ़ाते हुए युवाओं को आर्थिक रूप से सशक्त, जागरूक और भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार नागरिक बनाना भी प्राथमिकता है। मुख्यमंत्री के इसी विजन को धरातल पर उतारते हुए उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन (यूपीएसडीएम) और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के बीच शुक्रवार को एमओयू हुआ। योगी सरकार की इस पहल पर पहली बार कौशल प्रशिक्षण को वित्तीय शिक्षा से जोड़ा जा रहा है। इस साझेदारी के तहत यूपीएसडीएम तथा दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना (डीडीयू जीकेवाई) के अंतर्गत प्रदेश भर में 1000 से अधिक ट्रेनिंग सेंटर में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे 1.5 लाख से अधिक युवाओं को अगले हफ्ते से फाइनेंशियल स्किलिंग की विशेष ट्रेनिंग दी जाएगी। प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमशीलता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने कहा कि यह एमओयू प्रदेश के युवाओं के जीवन में एक महत्वपूर्ण बदलाव लेकर आएगा। कौशल प्रशिक्षण के बाद रोजगार पाने वाले युवा अब केवल आय अर्जित नहीं करेंगे, बल्कि यह भी समझेंगे कि पहली सैलरी का सही उपयोग कैसे करें, बजट और बचत कैसे शुरू करें, इन्वेस्टमेंट कब और कहां करना चाहिए, लोन से कैसे बचना है, भविष्य की आर्थिक सुरक्षा कैसे तैयार करनी है। यह ट्रेनिंग युवाओं को घर खरीदने, व्यवसाय शुरू करने, परिवार की आर्थिक सुरक्षा, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवानिवृत्ति जैसे जीवन के बड़े निर्णय लेने में भी सक्षम बनाएगी। साथ ही वित्तीय जागरूकता उन्हें ऑनलाइन धोखाधड़ी, फर्जी निवेश योजनाओं और आर्थिक जोखिमों से सुरक्षित रहने में भी मदद करेगी। युवाओं को 'स्किल/फाइनेंशियल इंटेलीजेंस' के माध्यम से रोजगार से आगे बढ़कर आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने वाला एक ऐतिहासिक कदम साबित होगा। एमओयू से पहले मिशन मुख्यालय स्थित सभागार में फाइनेंशियल लिटरेसी एंड

अवेयरनेस वर्कशॉप का आयोजन किया गया, जिसमें विभागीय अधिकारियों, कर्मचारियों को वित्तीय जागरूकता एवं आर्थिक निर्णय क्षमता का महत्व बताया गया। मिशन निदेशक भी वर्कशॉप में मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि आज के समय में ऑनलाइन फ्रॉड, फर्जी निवेश योजनाओं और वित्तीय अनिश्चितताओं के दौर में युवाओं को वित्तीय शिक्षा देना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है। इसी को ध्यान में रखते हुए हमने फाइनेंशियल स्किलिंग की ट्रेनिंग देने का निर्णय लिया है। प्रेसेंटेशन के माध्यम से एनएसई के अधिकारियों ने फाइनेंशियल सक्सेस के 12 मूल मंत्र बताए । उन्होंने बताया पहले खुद के भविष्य के लिए बचत करें। इनकम से कम खर्च करें।

आपातकालीन फंड तैयार रखें। हाई इंटरेस्ट पर लोन लेने से बचें, रेगुलर इन्वेस्टमेंट करें। इन्वेस्टमेंट में विविधता रखें। रिस्क और रिटर्न की समझ रखें। टैक्स को देखते हुए निवेश करें। आवश्यक बीमा करवाएं। लॉन्ग टर्म एसेट्स लें और समय-समय पर इन्वेस्टमेंट की समीक्षा करें। वर्कशॉप में कर्मचारियों को सारथी एप (सारथि ऐप) के बारे में भी विस्तार से बताया गया। यह इन्वेस्टमेंट एजुकेशन के लिए बनाया गया एक उपयोगी डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जो उपयोगकर्ताओं को इन्वेस्टमेंट संबंधी शैक्षणिक वीडियो, वित्तीय योजना के टूल्स, कैलकुलेटर और फाइनेंशियल हेल्थ चेक अप जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराता है। वर्कशॉप में अपर मिशन निदेशक पूजा मिश्रा, जॉइंट डायरेक्टर मयंक गंगवार, वित्त नियंत्रक संदीप कुमार, असिस्टेंट डायरेक्टर एम के सिंह, असिस्टेंट डायरेक्टर पवित्रा टंडन व मिशन के अन्य कर्मचारी मौजूद रहें । वहीं, एनएसई से चीफ रेग्युलेटरी ऑफिसर अंकित शर्मा, वाइस प्रेसिडेंट जोगिंदर सिंह और यूपी रीजन की सीनियर इंचार्ज श्रुति शर्मा भी वर्क शॉप में मौजूद रहीं । कौशल विकास का वास्तविक उद्देश्य तब तक अधूरा है, जब तक हमारे युवा अपनी कमाई का सही उपयोग और मैनेजमेंट करना न सीखें। आज रोजगार पाना जरूरी है, लेकिन उससे भी अधिक आवश्यक है वित्तीय रूप से समझदार बनना। एनएसई के साथ यह साझेदारी युवाओं को स्किल/फाइनेंशियल इंटेलीजेंस के मॉडल पर तैयार करेगी, जिससे वे केवल नौकरी पाने वाले नहीं बल्कि आर्थिक रूप से सक्षम और जिम्मेदार नागरिक बन सकेंगे।

डीएम की अध्यक्षता में पीएम आवास योजना (ग्रामीण) की समीक्षा बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में शनिवार को कलेक्ट्रेट सभागार में प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण)

की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में परियोजना निदेशक डीआरडीए प्रमोद सिंह ने स्थायी पात्रता सूची बनाये जाने हेतु प्राप्त एस0ओ0पी0 में बिन्दुवार दर्शित प्रक्रिया के सम्बन्ध में समस्त खण्ड विकास अधिकारियों को विस्तृत जानकारी दी गयी तथा अवगत कराया गया कि समस्त खण्ड विकास अधिकारियों को एस0ओ0पी0 के सम्बन्ध में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भारत सरकार की टेक्निकल टीम द्वारा भी प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है।इस सम्बन्ध में ड्राफ्ट स्थायी पात्रता सूची को 30 जून 2026 के पूर्व ग्राम सभा के निर्धारित रोस्टर के अनुसार प्रस्तावित बैठक में अंतिम रुप प्रदान करने की प्रक्रिया में प्रत्येक लाभार्थी के आवास सर्वे 2024 में दर्ज तथ्यों की चेकिंग करते हुए आवश्यक संशोधन किया जायेगा तथा सभी संशोधनों को कारण सहित ग्राम सभा की बैठक की कार्यवाही में सम्मिलित किया जायेगा। ग्राम सभा की बैठक की कार्यवाही के प्रत्येक भाग को ग्राम प्रधान/प्रशासक एवं ग्राम पंचायत सचिव द्वारा हस्ताक्षर करते हुए सुस्पष्ट पीडीएफ एवं जी0पी0एस0 युक्त फोटोग्राफ को आवास साफ्ट पर अपलोड कराया जायेगा। परियोजना निदेशक द्वारा बैठक में खंड विकास अधिकारियों को यह भी अवगत कराया गया कि प्रत्येक लाभार्थी के फैक्ट चेकिंग के लिए सचिवों को दिये जा रहे सिस्टम जनरेटेड प्रिंट में उल्लिखित बिन्दुओं के अतिरिक्त निर्धारित बिंदुओं पर भी चेकिंग करते हुए आख्या दिया जाना अनिवार्य होगा। निर्धारित बिंदुओं के अनुसार यदि लाभार्थी को पूर्व में प्रधानमंत्री/मुख्यमंत्री आवास योजना का लाभ मिल चुका है। यदि लाभार्थी मृतक हो गया है और उसका कोई वारिस नहीं है। यदि लाभार्थी स्थायी रूप से पलायित हो गया हो। जिलाधिकारी ने समस्त खण्ड विकास अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि विकास खण्ड स्तर पर तत्काल समस्त सचिवों तथा सेक्टर प्रभारी की बैठक कराकर एस0ओ0पी0 के अनुसार पूरी प्रक्रिया की जानकारी/प्रशिक्षण प्रदान कर दिया जाये तथा बैठक की कार्यवाही का कार्यवृत्त भी प्रेषित किया जाये। जिलाधिकारी ने यह भी निर्देश दिये कि यदि सर्वे किये गये लाभार्थियों की ड्राफ्ट सूची का गलत वेरीफिकेशन किया गया तो सम्बन्धित सचिव ग्राम पंचायत के विरूद्ध अनुशासनिक व वैधानिक कार्यवाही प्रस्तावित करते हुए अवगत कराया जाए साथ ही ग्राम सभा की बैठक में प्रस्तावित किसी भी प्रकार के संशोधन पाये जाने पर उसकी जांच जिला स्तरीय अधिकारियों से करायी जाये। किसी भी दशा में सूची में सम्मिलित पात्र लाभार्थी का नाम कटने न पाये यह सुनिश्चित कराया जाये। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता, जिला विकास अधिकारी वर्षा सिंह सहित समस्त खण्ड विकास अधिकारी उपस्थित रहे।

नोएडा वालों की बल्ले-बल्ले, आज से शुरू होगी ई-सिटी बस सेवा,गौतमबुद्ध नगर बन जाएगा देश का ऐसा पहला शहर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा, ग्रेटर नोएडा और ग्रेनो वेस्ट में आज से ई-सिटी बस सेवा शुरू हो रही है, जिससे 10 लाख निवासियों

का लंबा इंतजार खत्म होगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इसका उद्घाटन करेंगे। नोएडा ग्रेटर नोएडा और ग्रेनो वेस्ट के 10 लाख निवासियों का लंबे समय से चल रहा सार्वजनिक परिवहन का इंतजार आज समाप्त हो रहा है। आज से ई-सिटी बस सेवा शुरू हो रही है, जो शहरवासियों को एक नई सुविधा प्रदान करेगी। इस सेवा का उद्घाटन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा किया जाएगा, जिसमें पहले चरण में 110 ई-सिटी बसों का संचालन किया जाएगा। इनमें से 33 बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जाएगा, जिनमें नोएडा सेक्टर-33 स्थित नोएडा शिल्प हाट से 11, ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण कार्यालय से 11 और यमुना एक्सप्रेसवे प्राधिकरण के मेडिकल डिवाइस पार्क से 11 बसें शामिल होंगी। इस परियोजना के तहत नोएडा देश का पहला ऐसा शहर बन जाएगा, जहां ई-सिटी बस के लिए सबसे बड़ा इंफ्रास्ट्रक्चर स्थापित किया गया है। यह डिपो नोएडा सेक्टर-90 में स्थित है, जहां से 510 इलेक्ट्रिक बसों का संचालन किया जाएगा। चार्जिंग स्टेशन पहले से तैयार-नोएडा सेक्टर-90 स्थित ई सिटी बस डिपो पर लगभग 150 चार्जिंग स्टेशन पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मॉडल पर बनाए जा रहे हैं, जिनमें से पांच स्थायी चार्जिंग स्टेशन पहले से तैयार हो चुके हैं। इन चार्जिंग स्टेशनों पर एक साथ कई ई बसों को चार्ज किया जा सकता है। 63 इलेक्ट्रिक बसें नोएडा डिपो पहुंच चुकी-अब तक 8 डबल डेकर बसें और 63 इलेक्ट्रिक बसें नोएडा डिपो पहुंच चुकी हैं। 15 जून तक 100 इलेक्ट्रिक बसें डिपो पर उपलब्ध होंगी। मुख्यमंत्री ने बताया कि ई-मेरठ, आगरा, अलीगढ़, मथुरा और अन्य शहरों की ई बसें नोएडा सेक्टर-90 और बॉटेनिकल गार्डन मिनी बस डिपो से संचालित होंगी। ये इलेक्ट्रिक बसें चार्ज होने के बाद 300 किलोमीटर की दूरी तय कर सकेंगी। इस प्रकार, पश्चिम उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से ई बसों की सुविधा अब नोएडा के माध्यम से उपलब्ध होगी। ई सिटी बसों का न्यूनतम संचालन 200 किलोमीटर तक अनिवार्य किया गया है। शहर में दूरी के अनुसार, सिटी बस का किराया 10, 20, 30 रुपये निर्धारित किया गया है, जबकि अधिकतम दूरी का किराया 50 रुपये होगा। अन्य जिलों में जाने के लिए रोडवेज का निर्धारित किराया मान्य रहेगा।

मैहर शहर में पटरी से उतरी यातायात व्यवस्था घंटाघर चौराहे से लेकर ओवर ब्रिज तक प्रशासन किसी बड़ी दुर्घटना का कर रहा है इंतजार - युवक कांग्रेस प्रदेश सचिव शिवम पाण्डेय

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मैहर। मैहर में बिगड़ी यातायात व्यवस्था, घंटाघर चौराहे से ओवरब्रिज तक जाम के हालात, प्रशासन पर उठे सवाल,मैहर शहर में इन दिनों यातायात व्यवस्था पूरी तरह पटरी से उतरती नजर आ रही है। घंटाघर चौराहे से लेकर ओवरब्रिज तक सड़क पर अव्यवस्थित पार्किंग, बढ़ता अतिक्रमण और यातायात नियंत्रण की कमी के कारण आम जनता को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। राहगीरों का कहना है कि शहर की यातायात व्यवस्था बदहाल हो चुकी है और प्रशासन किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार कर रहा है।

व्यस्त मार्ग होने के बावजूद यहां व्यवस्था सुधारने के लिए ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। आए दिन जाम की स्थिति बनती है, जिससे वाहन चालकों और पैदल चलने वालों को परेशानी होती है। युवक कांग्रेस प्रदेश सचिव शिवम पाण्डेय ने प्रशासन पर सवाल उठाते हुए कहा उन्होंने मांग की है कि जल्द से जल्द यातायात व्यवस्था दुरुस्त की जाए, अतिक्रमण हटाया जाए और लोगों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी जाए। अब देखना होगा कि प्रशासन इस गंभीर समस्या पर कब तक कार्रवाई करता है या फिर किसी हादसे के बाद ही व्यवस्था सुधारी जाएगी।

वाराणसी में जिला जज की कुर्सी पर बैठी गई महिला, बोली- आज मैं सुनवाई करूंगी, गवाह और सबूत पेश करिए, पुलिस ने नीचे उतारा

वाराणसी। शुक्रवार सुबह 9 बजे जिला जज की कुर्सी पर एक महिला बैठ गई। कुर्सी पर बैठते ही हैमर पटकते हुए चिल्लाई- ऑर्डर-ऑर्डर। वकीलों से कहा- आज मैं जिला जज हूं। गवाह और सबूत पेश करिए। आज सारे मामले पास आने वालों को धमकी दी। इसके बाद महिला पुलिस बल को बुलाया गया। पुलिस ने वंदना को जिला जज की कुर्सी से नीचे उतारा। अपर जिला जज ने लगाई फटकार, तलब की रिपोर्ट घटना की जानकारी पर अपर जिला जज

की सुनवाई मैं करूंगी। जो भी काम हो हमको बताया जाए। इसके बाद फाइलें उठाकर उनको पलटना शुरू कर दिया। एकाएक हुए इस घटनाक्रम से वकील चौंक गए। उन्होंने वीडियो बनाना शुरू किया तो महिला भड़क गई। वकीलों ने महिला को बाहर जाने के लिए कहा, लेकिन वह कुर्सी पर ही बैठी रहीं। इसके बाद महिला पुलिसकर्मियों को बुलाया गया। पुलिस महिला को हिरासत में लेकर कैंट थाने लेकर चली गई। करीब एक घंटे तक यह ड्रामा चला। बताया जा रहा है कि शुक्रवार को जिला जज अवकाश पर थे। कुर्सी पर बैठते ही महिला चिल्लाई- ऑर्डर-ऑर्डर शुक्रवार सुबह जिला कोर्ट खुला। कर्मचारियों ने जिला जज समेत सभी कोर्ट में आज सुनवाई के लिए प्रस्तावित मुकदमों की फाइलें रख दीं। तभी शिवपुर निवासी बुज गुप्ता की पत्नी वंदना गुप्ता (50) कोर्ट में घुस आईं।जिला जज के आने का समय पूछा। कुछ देर बाद वह जिला जज की डायस पर पहुंच गईं और कुर्सी पर बैठ गईं। हैमर उठाकर टेबल पर पटकते हुए जोर से चिल्लाकर कहा-ऑर्डर-ऑर्डर। यह सुनकर कोर्ट रूम में मौजूद वकील खड़े हो गए। यह देखकर वंदना गुप्ता बोली कि आप लोग खड़े मत हों। गवाह और सबूत पेश करिए। जो भी काम हो मुझे बताइए। पुलिस ने कुर्सी से उठाया, थाने लेकर गई जज की कुर्सी में वंदना के बैठने की सूचना मिलते ही कई वकील दौड़ते हुए कोर्ट रूम पहुंचे। उन्होंने वंदना से कुर्सी से नीचे उतरने को कहा। लेकिन वह नहीं मानी। वकील डायस के पास पहुंचे तो वह उन पर चिल्लाने लगी। यजुवेंद्र विक्रम सिंह मौके पर पहुंचे। उन्होंने ड्यूटी पर तैनात सुरक्षा कर्मियों की अनुपस्थिति पर नाराजगी जताई। संबंधित अधिकारियों से स्पष्टीकरण मांगे जाने के निर्देश दिए।इसके बाद न्यायालय प्रशासन ने सभी प्रवेश द्वारों पर तैनात सुरक्षा कर्मियों को निर्देश दिए हैं कि उक्त महिला को कचहरी परिसर में प्रवेश न करने दिया जाए। घटना के बाद न्यायालय परिसर की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े हो गए। पहले भी हंगामा कर चुकी हैं वंदना वकीलों के अनुसार, वंदना का न्यायालय में कोई मामला लंबित नहीं है। वह पहले भी कई बार न्यायालय परिसर में पहुंचकर जज की कुर्सी पर बैठ चुकी है। महिला ने ऐसा क्यों किया? इस सवाल पर पुलिस का कहना है कि महिला से पूछताछ की जा रही है।दो शादियां की, विवाद के पतियों ने अलग हुईं-कोर्ट में हंगामा करने वाली वंदना गुप्ता की दो शादियां हुई थीं। पहली शादी 2010 में मिर्जापुर के अहरौरा के रहने वाले राजेंद्र प्रसाद केसरी से हुई थी। पति पर आरोप लगाते हुए 2012 में दोनों अलग हो गए। इसके बाद वंदना ने पति और उसके परिवार के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया, जिसकी सुनवाई फैमिली कोर्ट में चल रही है। इसके बाद 2013 में वंदना ने गोरखपुर निवासी अंबुज अग्रवाल से विंध्याचल मंदिर में दूसरी शादी की। कुछ साल बाद वह दूसरे पति से भी अलग हो गईं। 2018 में वंदना की मां और 2021 में पिता का निधन हो गया। पुलिस का कहना है कि अकेले रहने के कारण वह डिप्रेशन में चली गई थीं।

बरसात से पूर्व जलभराव की समस्या के स्थायी समाधान को लेकर प्रशासन सक्रिय,इमरती कॉलोनी एवं मार्केट क्षेत्र की जल निकासी व्यवस्था होगी सुदृढ़

जिलाधिकारी ने सीएनडीएस, नगर पालिका, जल निगम व आईआईटी विशेषज्ञों के साथ की विस्तृत समीक्षा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) जनपद में वर्षाकाल के दौरान होने

वाली जलभराव की समस्या के स्थायी समाधान हेतु जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने सीएनडीएस, नगर पालिका परिषद, जल निगम तथा आईआईटी कानपुर के विशेषज्ञों के साथ विस्तृत समीक्षा बैठक कर जल निकासी व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। गौरतलब है कि इमरती कॉलोनी एवं आसपास के क्षेत्रों में बरसात के दौरान होने वाले जलभराव की समस्या के समाधान के लिए पूर्व में स्थलीय निरीक्षण किया गया था, जिसमें स्थानीय नागरिकों एवं जनप्रतिनिधियों से सुझाव प्राप्त किए गए थे। इसके उपरांत संबंधित विभागों द्वारा विस्तृत सर्वेक्षण कराया गया तथा आईआईटी कानपुर की विशेषज्ञ टीम ने तकनीकी परीक्षण एवं अध्ययन कर विभिन्न विकल्पों का मूल्यांकन किया। बैठक में विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट एवं ड्रेनेज डिजाइन की समीक्षा करते हुए बताया गया कि इमरती कॉलोनी से बढ़ौली चौराहा, कचहरी एवं महिला थाना मार्ग होते हुए बेलन नदी तक नाले का निर्माण जल निकासी के लिए सर्वाधिक प्रभावी एवं व्यवहारिक विकल्प होगा। इस प्रस्ताव से क्षेत्र में वर्षाजल का त्वरित एवं सुगम निकास सुनिश्चित हो सकेगा तथा श्री चर्चित गौड़ ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि बरसात से पूर्व आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण कराया जाए। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि पुराने नगर पालिका क्षेत्र का समग्र सर्वेक्षण कर वैज्ञानिक आधार पर नया ड्रेनेज प्लान तैयार किया जाए, ताकि भविष्य में किसी भी क्षेत्र में जलभराव की स्थिति उत्पन्न न हो। उन्होंने कहा कि नागरिकों को जलभराव जैसी समस्याओं से राहत दिलाना प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है तथा इसके लिए सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें।

सपा नोएडा महानगर व्यापार सभा की मासिक बैठक संपन्न, व्यापारियों की समस्याओं पर हुई चर्चा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। समाजवादी पार्टी नोएडा महानगर व्यापार सभा की मासिक

बैठक का आयोजन सेक्टर-22 स्थित सैफ्रन बैंक्विट हॉल में किया गया। बैठक की समीक्षा एवं अध्यक्षता समाजवादी पार्टी व्यापार सभा के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जायसवाल ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रदेश अध्यक्ष ने व्यापारियों की समस्याओं को प्रमुखता से उठाते हुए वर्तमान सरकार की नीतियों पर सवाल खड़े किए। बैठक को संबोधित करते हुए प्रदीप जायसवाल ने कहा कि आज देश का व्यापारी वर्ग अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। उन्होंने कहा कि जीएसटी लागू होने के बाद छोटे और मध्यम व्यापारियों की आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है तथा बढ़ती जटिलताओं के कारण व्यापार करना कठिन होता जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि वर्तमान सरकार में व्यापारियों की समस्याओं को गंभीरता से नहीं सुना जा रहा है, जिसके कारण व्यापारी वर्ग स्वयं को उपेक्षित महसूस कर रहा है। इस अवसर पर समाजवादी पार्टी नोएडा महानगर अध्यक्ष डॉ. आश्रय गुप्ता ने कहा कि समाजवादी पार्टी हमेशा व्यापारियों, युवाओं, मजदूरों और आम जनता की आवाज़ को मजबूती से उठाती रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार की नीतियों के कारण छोटे व्यापारी आर्थिक दबाव में हैं और बाजारों में कारोबार प्रभावित हुआ है। डॉ. गुप्ता ने व्यापारियों को आश्वस्त किया कि समाजवादी पार्टी उनके हितों की लड़ाई सड़क से सदन तक लड़ती रहेगी।बैठक में संगठन को मजबूत बनाने, व्यापारियों की स्थानीय समस्याओं को प्रशासन के समक्ष प्रभावी ढंग से उठाने तथा आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा पर भी विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में प्रमुख रूप से प्रदेश अध्यक्ष व्यापार सभा प्रदीप जायसवाल, अरिहंत मंडल प्रभारी अक्षय जैन, महानगर अध्यक्ष डॉ. आश्रय गुप्ता, बाबूलाल बंसल, विकास यादव, शिव कुमार यादव, उमेश सिंह, रामवीर यादव, राणा मुखर्जी, निश्चल एवं गुड्डू उपस्थित रहे।

यूपीआईटीएस 2026 ने दिल्ली रोडशो के साथ देशव्यापी प्रचार अभियान का किया शुभारंभ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो (यूपीआईटीएस) 2026) के चौथे संस्करण के प्रचार अभियान का शुभारंभ आज नई दिल्ली में आयोजित भव्य रोड शो के साथ हुआ। यह देशव्यापी प्रचार श्रृंखला का पहला चरण है, जिसका उद्देश्य देशभर के उद्योग जगत, निर्यातकों, खरीदारों, व्यापारिक संगठनों एवं निवेशकों को इस महत्त्वपूर्ण आयोजन से जोड़ना है। यूपीआईटीएस आज भारत के सबसे महत्वपूर्ण राज्य-स्तरीय व्यापार आयोजनों में से एक के रूप में स्थापित हो चुका है और अब इसे उत्तर प्रदेश सरकार एवं इंडिया एक्सपोजिशन मार्ट लिमिटेड (आईईएमएल) द्वारा संयुक्त रूप से वार्षिक फ्लैगशिप आयोजन के रूप में आयोजित किया जा रहा है। पिछले तीन संस्करणों की उल्लेखनीय सफलता के आधार पर यूपीआईटीएस का चौथा संस्करण 25 से 29 सितम्बर 2026 तक इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश में आयोजित किया जाएगा। दिल्ली रोड शो में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय एमएसएमई मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार भूपेन्द्र चौधरी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में माननीय एमएसएमई राज्य मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार हंसराज विश्वकर्मा, प्रमुख सचिव एमएसएमई एवं निर्यात प्रोत्साहन विभाग उत्तर प्रदेश सरकार शशि भूषण लाल सुशील (आईएएस) संयुक्त सचिव (राज्य) विदेश मंत्रालय अजय कुमार, अध्यक्ष इंडिया एक्सपोजिशन मार्ट लिमिटेड डॉ राकेश कुमार, मुख्य कार्यकारी

अधिकारी इंडिया एक्सपोजिशन मार्ट लिमिटेड सुदीप सरकार तथा फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन्स (एफआईईओ) के अतिरिक्त महानिदेशक सुविध शाह विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।इस अवसर पर संबोधित करते हुए माननीय मुख्य अतिथि भूपेन्द्र चौधरी ने कहा की यूपीआईटीएस उत्तर प्रदेश की औद्योगिक शक्ति, उद्यमशीलता, निर्यात क्षमता और सांस्कृतिक समृद्धि को प्रदर्शित करने वाला एक सशक्त मंच बन चुका है। इस आयोजन ने एमएसएमई क्षेत्र को सुदृढ़ बनाने, ओडीओपी उत्पादों को बढ़ावा देने, बाजार तक पहुंच उपलब्ध कराने तथा नए व्यावसायिक अवसर सृजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उत्तर प्रदेश जैसे-जैसे एक ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर है, यूपीआईटीएस व्यापार, निवेश और आर्थिक विकास को गति देने वाले प्रमुख उत्प्रेरक के रूप में अपनी भूमिका निभाता रहेगा। उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय एमएसएमई राज्य मंत्री हंसराज विश्वकर्मा ने यूपीआईटीएस 2026 में अधिक से अधिक सहभागिता का आह्वान करते हुए कहा की भारत में सदियों से व्यापार मेलों और बाजारों की एक समृद्ध परंपरा रही है, जिसने पीढ़ियों से कारीगरों, शिल्पकारों, लघु उद्यमों और उद्यमियों को सशक्त बनाया है। इसी गौरवशाली विरासत को आधुनिक और वैश्विक स्वरूप प्रदान करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार ने एक ऐसे मंच की परिकल्पना की, जिसकी पहुँच अंतरराष्ट्रीय हो, लेकिन जिसकी जड़ें भारत की स्वदेशी शक्ति, कौशल और उद्यमशीलता की भावना में गहराई से निहित हों। उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो 'यूपीआईटीएस' उत्तर प्रदेश को विश्व से जोड़ने वाला एक सशक्त सेतु है। उत्तर प्रदेश सरकार के एमएसएमई एवं निर्यात प्रोत्साहन विभाग के प्रमुख सचिव शशि भूषण लाल सुशील(आईएएस) ने कहा की यूपीआईटीएस उत्तर प्रदेश सरकार के उस विज़न को प्रतिबिंबित करता है जिसके तहत राज्य को व्यापार, विनिर्माण, निर्यात और निवेश के लिए एक पसंदीदा गंतव्य के रूप में स्थापित किया जा रहा है। इस रोड शो श्रृंखला के माध्यम से हमारा

उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो का चौथा संस्करण 25-29 सितम्बर 2026 को इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट ग्रेटर नोएडा में होगा आयोजित

उद्देश्य देशभर के उद्योग जगत से जुड़ाव को और मजबूत करना तथा उद्योगों, संस्थानों और खरीदारों की भागीदारी को बढ़ाना है। यूपीआईटीएस अवसरों और बाजारों को उद्यमों से जोड़ने वाला एक प्रभावी सेतु बन चुका है। इस अवसर पर इंडिया एक्सपोजिशन मार्ट लिमिटेड के अध्यक्ष डॉ राकेश कुमार ने कहा की पिछले तीन संस्करणों में यूपीआईटीएस को मिली अभूतपूर्व प्रतिक्रिया इस मंच पर उद्योग और व्यापार समुदाय के विश्वास को दर्शाती है। यूपीआईटीएस ने निर्माताओं, निर्यातकों, स्टार्टअप्स, कारीगरों, निवेशकों और नीति निर्माताओं को एक ही मंच पर सफलतापूर्वक एकत्रित किया है। हमें विश्वास है कि चौथा संस्करण सहभागिता, व्यापारिक अवसरों और अंतरराष्ट्रीय पहुंच के नए मानक स्थापित करेगा। कार्यक्रम के अंतरराष्ट्रीय आयाम पर प्रकाश डालते हुए एफआईईओ के अतिरिक्त महानिदेशक सुविध शाह ने कहा की यूपीआईटीएस में विदेशी खरीदारों की लगातार बढ़ती भागीदारी यह दर्शाती है कि उत्तर प्रदेश से उभर रहे उत्पादों और अवसरों के प्रति वैश्विक रुचि निरंतर बढ़ रही है। एफआईईओ गुणवत्तापूर्ण अंतरराष्ट्रीय खरीदारों को जोड़ने और सार्थक व्यापारिक संवाद को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है, जिससे भारतीय निर्यातकों को नए बाजारों तक पहुंचने और भारत की वैश्विक व्यापारिक उपस्थिति को सशक्त बनाने में सहायता मिल सके। सितम्बर 2025 में आयोजित यूपीआईटीएस के पिछले संस्करण का उद्घाटन स्वयं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया था। अपने संबोधन में उन्होंने एमएसएमईज़ को प्रोत्साहित करने, स्थानीय उद्यमों को सशक्त बनाने तथा मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड की परिकल्पना को आगे बढ़ाने में इस आयोजन की भूमिका की सराहना की थी। मा0 प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश की बढ़ती आर्थिक क्षमता पर विश्वास व्यक्त करते हुए यूपीआईटीएस को स्थानीय उद्यमों को वैश्विक अवसरों से जोड़ने वाला प्रभावी मंच बताया था।यूपीआईटीएस की सफलता इसकी लगातार बढ़ती सहभागिता और व्यापारिक उपलब्धियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वर्ष 2025 के संस्करण में 5,07,099 से अधिक आगंतुकों ने भाग लिया, जिनमें 1,40,735 बी2बी विज़िटर्स शामिल थे। इस आयोजन में 2,228 प्रदर्शकों ने 35,000 वर्ग मीटर से अधिक प्रदर्शनी क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम के दौरान हजारों व्यावसायिक बैठकें आयोजित हुईं तथा प्रतिभागी उद्यमों के लिए महत्वपूर्ण व्यापारिक अवसर सृजित हुए।यूपीआईटीएस अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक सहभागिता के एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में भी उभरा है। पिछले संस्करण में एफआईईओ के सहयोग से 85 देशों से 550 से अधिक विदेशी खरीदारों ने भाग लिया, जिसने उत्तर प्रदेश को वैश्विक सोर्सिंग गंतव्य के रूप में और अधिक सुदृढ़ बनाया। दिल्ली रोड शो आगामी महीनों में देश के विभिन्न राज्यों में आयोजित होने वाली प्रचार गतिविधियों की श्रृंखला की शुरुआत है। इन रोडशोज़ का उद्देश्य घरेलू खरीदारों की भागीदारी को बढ़ाना, अंतरराज्यीय व्यापार एवं वाणिज्य को प्रोत्साहित करना, भारतीय उद्यमों से सोर्सिंग को बढ़ावा देना तथा देश के भीतर मजबूत व्यापारिक संबंध स्थापित कर आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को साकार करने में योगदान देना है। इसके साथ ही यूपीआईटीएस अंतरराष्ट्रीय भागीदारी को बढ़ाने और उत्तर प्रदेश को एक अग्रणी वैश्विक सोर्सिंग हब के रूप में स्थापित करने पर भी विशेष ध्यान केंद्रित कर रहा है। व्यापक खरीदार संपर्क कार्यक्रमों और निर्यात प्रोत्साहन संस्थाओं के साथ रणनीतिक साझेदारी के माध्यम से वर्ष 2026 में और अधिक अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक भागीदारी आकर्षित करने का लक्ष्य रखा गया है। उत्तर प्रदेश की व्यापारिक परंपराओं और आर्थिक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करते हुए यूपीआईटीएस राज्य की विनिर्माण क्षमता, एमएसएमई सामर्थ्य, ओडीओपी उत्पादों, नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र, निर्यात, संस्कृति, व्यंजन, पर्यटन, हस्तशिल्प तथा उभरते औद्योगिक क्षेत्रों को एक ही मंच पर प्रस्तुत करता है। इस आयोजन ने ओडीओपी उत्पादों के लिए बाजार विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और आगामी संस्करण में वन डिस्ट्रिक्ट वन क्यूज़ीन (ओडीओपी) जैसी पहलों को भी नई गति मिलने की उम्मीद है।उत्तर प्रदेश जहां एक ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है और भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के राष्ट्रीय संकल्प में योगदान दे रहा है, वहीं यूपीआईटीएस 2026 व्यापार, निवेश, निर्यात, नवाचार और वैश्विक साझेदारियों को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

देश में युवाओं का बढ़ता आक्रोश हमें कुछ बताता है

आज सब तरफ कॉकरोच शब्द की चर्चा है। किन्तु इसके हमारे राजनीतिक शब्दकोश का हिस्सा बनने से बहुत पहले ही मैं इस शब्द का उपयोग करता आ रहा हूं। ईश्वर न करे, लेकिन कल किसी परमाणु विस्फोट में दुनिया नष्ट हो जाए, तब भी केवल कॉकरोच ही जीवित बचेंगे। एक तरह की विपत्ति के बीच जीवित रहने की क्षमता रखता है। यह तथ्य कि एक अपेक्षाकृत अनजान पोलिटिकल कम्युनिकेशन स्ट्रैटेजिस्ट द्वारा किसी अमेरिकी विश्वविद्यालय में बैठकर शुरू किया गया एक व्यंग्यात्मक आंदोलन अचानक सत्ता गलियारों में बेचैनी पैदा कर दे, अपने आप में बहुत

ग्रेट-सर्वाइवर से राजनीतिक प्रतिरोध के प्रतीक तक, कॉकरोचों ने एक लंबी यात्रा तय की है। कॉकरोच जनता पार्टी या सीजेपी का उदय उस व्यवस्था के प्रति बढ़ते जनाक्रोश को दर्शाता है, जो इतनी खण्डित हो चुकी है कि प्रदर्शनकारियों को लोकतंत्र पर मंडराते खतरों की ओर संकेत करने के लिए एक कीड़े की छवि का सहारा लेना पड़ा है। हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जिसमें नेतागण सम्राटों की तरह व्यवहार करने लगे हैं और विपक्ष कोई विश्वसनीय चुनौती पेश नहीं कर पा रहा है। इसी शून्य में कॉकरोच रेंगता हुआ प्रवेश करता है- एक ऐसा प्राणी, जिससे हमें घृणा करना और डरना सिखाया गया है, फिर भी जो हर कुछ बताता है। आखिर एक शक्तिशाली राष्ट्र को मुख्य न्यायाधीश की गैर-जरूरी टिप्पणी से उपजे ऑनलाइन-आंदोलन से चिंतित क्यों होना चाहिए? भारत के बेरोजगार युवाओं का मानो उपहास करते हुए मुख्य न्यायाधीश ने अनजाने में एक तीखी प्रतिक्रिया को जन्म दे दिया : क्रोध, अलगाव और व्यंग्य से संचालित एक डिजिटल विद्रोह। तब से लाखों युवा भारतीय इसके इर्द-गिर्द एकजुट हो चुके हैं। इस पूरी घटना को विशेष रूप से दिलचस्प बनाने वाली बात यह है कि सीजेपी वास्तव में कोई राजनीतिक दल नहीं है। उसका न कोई नेता है, न कार्यालय, न कार्यकर्ता-तंत्र, न कोई संगठनात्मक ढांचा। 1.5 अरब की आबादी और असाधारण विविधता वाले इस देश में केवल साइबर-स्पेस में मौजूद एक आंदोलन को सिद्धांततः यथास्थिति के लिए खतरा नहीं होना चाहिए। फिर भी खतरा क्यों महसूस किया जा रहा है? सीजेपी पर विदेशी फंडिंग से संचालित होने का आरोप लगाया जा रहा है। झूठा दावा किया जा रहा है कि उसके अनेक समर्थक पाकिस्तानी हैं। उसके सोशल मीडिया हैंडल्स को ब्लॉक किया जा रहा है। कुछ लोगों ने तो उसे आम आदमी पार्टी का प्रॉक्सी सिद्ध करने की भी कोशिश की। यह सब एक प्रकार की संशयग्रस्त मानसिकता को उजागर करता है। इस घबराहट के पीछे कई कारण हैं। अव्वल तो यही कि यह काफी हद तक नैरेटिव को कंट्रोल करने का दौर है। इस दौर का राजकाज चौबीसों घंटे चलने वाले किसी विज्ञापन-अभियान जैसा प्रतीत होता है : उपलब्धियों का प्रचार करो, विफलताओं को दबा दो, नारे बदलो और आगे बढ़ जाओ। करोड़ों नौकरियां जिनका वादा किया गया था नहीं मिलीं, किसानों की आय दोगुनी नहीं हुई, पेपर लीक लगातार जारी हैं- लेकिन नैरेटिव-प्रबंधन यह सुनिश्चित करता है कि आम धारणा, प्रदर्शन पर भारी पड़े। ऐसे में यह चीज परेशान करने वाली लग सकती है कि इंटरनेट के ये कॉकरोच किसी लिखी हुई पटकथा का पालन करने से इंकार कर रहे हैं। दूसरे, युवाओं का आक्रोश चुनावी दृष्टि से महत्व रखता है। ऊंची जीडीपी वृद्धि के आंकड़ों और उग्र राष्ट्रवाद के शोर के पीछे एक ऐसी पीढ़ी मौजूद है, जो गहरी असुरक्षा से जूझ रही है। लाखों शिक्षित युवा रोजगार के घटते अवसरों, परीक्षाओं के बढ़ते दबावों और ऐसी अर्थव्यवस्था का सामना कर रहे हैं, जहां स्थायी नौकरी पाना लगातार दूर की कौड़ी बनता जा रहा है। बहुतों के लिए यह निराशा अब चिरस्थायी हो चुकी है। उन्हें लगता है कि राजनेता उन्हें केवल चुनावों के समय ही देखते हैं और केवल तभी सुनते हैं, जब वे विरोध-प्रदर्शन करते हैं। यह आक्रोश केवल वैचारिक ही नहीं है, यह कई मायनों में व्यक्तिगत भी है।यह हालिया चुनावों में भी स्पष्ट दिखाई दिया, विशेषकर तमिलनाडु में, जहां विजय की लोकप्रियता ने पारम्परिक राजनीति से तंग आ चुके युवा मतदाताओं को बड़े पैमाने पर आकर्षित किया। पूरे भारत में युवा मतदाता अब पुराने और जड़ राजनीतिक विचारों को लगातार अस्वीकार कर रहे हैं। वे ताजगी, प्रामाणिकता और भावनात्मक जुड़ाव की तलाश में हैं। मीम-संस्कृति उनके प्रतिरोध की भाषा बन चुकी है। और याद रहे कि व्यंग्य हमेशा राजनीतिक हथियार साबित होता है। अधिनायकवादी व्यवस्थाएं हास्य-व्यंग्य के सामने खुद को आश्चर्यजनक रूप से असुरक्षित ही पाती हैं। पूरे भारत में ही युवा मतदाता अब पुराने और जड़ राजनीतिक विचारों को लगातार अस्वीकार कर रहे हैं। वे ताजगी, प्रामाणिकता और भावनात्मक जुड़ाव की तलाश में हैं। मीम-संस्कृति उनके प्रतिरोध की भाषा बनती जा रही है। (ये लेखक के अपने विचार हैं,राजदीप सरदेसाई)

क्या आप कामकाजी महिलाओं के दोहरे बोझ को कम करने के बारे में सोच रहे हैं?

शुक्रवार को अधिकांश अंतरराष्ट्रीय अखबारों के पहले पन्ने पर शीर्ष वरीयता प्राप्त जानिक सिनर की तस्वीर छपी थी, जिन्हें फ्रेंच ओपन जीतने का प्रबल दावेदार माना जा रहा था। लेकिन इसकी वजह यह नहीं थी कि उन्होंने पिछले दिन कोई मैच जीता था, बल्कि यह थी कि वे विश्व रैंकिंग में 56वें स्थान पर मौजूद हुआन मानुएल

सीरुन्दोलो से हार गए थे। अधिकांश अखबारों ने उनकी हार का कारण यह बताया कि 'झुलसा देने वाली धूप ने फिलिप-शात्रिये कोर्ट को एक विशाल बैगेट ओवन में बदल दिया था और सिनर की हालत इतनी बिगड़ गई कि उन्हें पहचानना तक मुश्किल हो गया था।' मैच के बाद सिनर ने कहा, 'मुझे याद नहीं आखिरी बार मैं कब इतना कमजोर महसूस कर रहा था। मैं पूरी तरह थक चुका था- मेरा पूरा शरीर जवाब दे रहा था।' अधिकांश समाचार पत्रों और खेल पत्रकारों ने उनकी हार के लिए भीषण गर्मी को ही जिम्मेदार ठहराया। वास्तव में दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी तीसरे सेट में जीत से केवल एक गेम दूर थे, और ठीक उसी समय गर्मी ने उनकी सारी ऊर्जा सोख ली। इसे पढ़ते ही मुझे कुछ विश्वविद्यालय प्राध्यापिकाओं और स्कूल शिक्षिकाओं की याद आ गई, जो बताती रहती हैं कि दिनभर का पेशेवर काम पूरा करने के बाद जब वे अपनी 'सेकंड शिफ्ट' करने घर लौटती हैं, तो गर्मी और थकान उनकी सारी ऊर्जा चूस लेती है। यह ऐसा काम है, जिसमें कोई छुट्टी नहीं मिलती। उनका कहना था कि वे प्रतिदिन इस दबाव के नीचे निढाल हो जाती हैं और उनकी थकान को समझने या बांटने वाला कोई नहीं होता। और वे बिल्कुल सही थीं। अनेक कंजर्वेटिव या पारंपरिक परिवार गर्व के साथ कामकाजी बहू को स्वीकार तो कर लेते हैं, परंतु इसका प्रमुख कारण अकसर उससे मिलने वाला आर्थिक लाभ या सामाजिक प्रतिष्ठा होता है। लेकिन यह स्वीकृति प्रायः शर्तों के साथ आती है। मूल धारणा यही बनी रहती है कि उसके जॉब को पारंपरिक घरेलू बुनावट या परिवार की सुविधाओं में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं डालना चाहिए। समाज और मीडिया द्वारा गढ़े गए सुपरवुमन के मिथक ने आदर्श भारतीय महिला का एक अवास्तविक मानक स्थापित कर दिया है, जो मानो बिना किसी कठिनाई के सब कुछ हासिल कर सकती है। यदि वे सहायता मांगें, घरेलू कामकाज को किसी और से साझा करने का प्रयास करें या अपनी थकान जाहिर करें, तो इसे अकसर उनकी नाकामी या परिवार के प्रति समर्पण की कमी के रूप में देखा जाता है। जिस प्रकार कोई विश्व नंबर एक खिलाड़ी भीषण गर्मी में हमेशा जीत नहीं सकता, उसी प्रकार इन युवा महिलाओं से यह अपेक्षा करना भी अवास्तविक है कि वे एक आधुनिक पेशेवर की तरह कमाएं भी और एक पारंपरिक गृहणी की तरह सेवा भी करें। जब ये कामकाजी महिलाएं रसोइयों, सफाईकर्मियों या आया जैसी घरेलू सहायिकाओं को नियुक्त करके अपनी समय की कमी की समस्या का समाधान करने का प्रयास करती हैं, तो उन्हें अकसर प्रतिरोध या आलोचनात्मक निगरानी का सामना करना पड़ता है। परिवार के सदस्य बाहर के सहायकों द्वारा किए गए कार्य की गुणवत्ता पर सवाल उठा सकते हैं, उसमें अत्यधिक हस्तक्षेप कर सकते हैं, या फिर सूक्ष्म रूप से कामकाजी महिलाओं को यह संकेत देकर उनमें अपराध-बोध पैदा कर सकते हैं कि उनके कारण परिवार उपेक्षित हो रहा है या परायों के हाथ का खाना खा रहा है। दूसरी ओर- विशेषकर उभरते हुए शहरों की टाउनशिप में रहने वाले कुछ वरिष्ठ सदस्य- जो कठोर जेंडर भूमिकाओं वाले युग में बड़े हुए हैं, अकसर उन्हीं पैटर्न्स को आगे बढ़ाते हैं, जिन्हें उन्होंने स्वयं झेला था। यदि सास ने अपने समय में पूरा घर अकेले संभाला था, तो ऐसे परिवारों में नई बहुओं द्वारा काम के बंटवारे की मांग को कभी-कभी अधिकार-बोध या आलस्य के रूप में देखा जाता है। इसके अलावा, परिवार की शक्ति-संरचनाएं भी किसी नई दुल्हन के लिए घरेलू कामकाज की जिम्मेदारियों को सम्भालना बहुत मुश्किल बना देती हैं। जब किसी व्यक्ति से पर्याप्त आराम या सहयोग के बिना दो फुल-टाइम भूमिकाओं में लगातार बेहतरीन प्रदर्शन की अपेक्षा की जाती है, तो उसका परिणाम मानसिक और भावनात्मक थकान के रूप में सामने आता है। ऐसी महिलाएं एक निरंतर 'ऑलवेज़-ऑन' वाली अवस्था में जीती हैं, जहां उन्हें सही मायनों में आराम करने का बहुत कम अवसर मिलता है। उनका मन लगातार एक मानसिक चेकलिस्ट का प्रबंधन करता रहता है- ऑफिस की डेडलाइंस के साथ-साथ घर की जरूरतों- जैसे किराने का सामान, बच्चों की देखभाल और भोजन की योजना। धीरे-धीरे यह स्थिति एक टाइम-डिसीज़ का रूप ले लेती है, जो वस्तुतः इस मनोवैज्ञानिक अनुभूति को दर्शाती है कि समय कभी भी काफी नहीं होता।इसका परिणाम लगातार भाग-दौड़, अत्यधिक सतर्कता और अवकाश के क्षणों में भी आराम न कर पाने के रूप में सामने आता है। कामकाजी महिलाओं पर पड़ने वाले इस दोहरे बोझ को कम करने के लिए घरेलू स्तर पर तत्काल बदलाव, जीवनसाथी का सहयोग और परिवारों के कम्युनिकेट करने के तरीके में परिवर्तन- इन तीनों की आवश्यकता है। फंडा यह है कि जिस प्रकार खेल जगत अपने किसी चैंपियन के पीछे मजबूती से खड़ा होता है, उसी प्रकार हमें भी अपनी बहुओं के पीछे खड़ा होना चाहिए- क्योंकि वे भी हमारी बेटियां ही हैं। एन. रघुरामन

शिक्षित बेटी पूरी अगली पीढ़ी को शिक्षित और आर्थिक रूप से सुरक्षित करती है

लैपटॉप के सामने बैठी गृहिणी स्पष्टतः उत्साह से भरी आवाज में अपने पति को आवाज देती है, 'आशुतोष, हमारा पहला ऑर्डर।' पति स्क्रीन की ओर दौड़ते हैं, जैसे उन्हें सुनी हुई बात पर यकीन न हो। उनके नए चटनी के कारोबार को पहला ऑनलाइन ऑर्डर मिला है। यह दृश्य कल समाप्त हुए आईपीएल के दौरान दिखाए गए लोकप्रिय विज्ञापन 'रेड्डी वर्सेस रिटायरमेंट' का है, जिसमें एक रिटायर्ड कपल एआई की मदद से कारोबार शुरू करता है। यह तकनीक लेबल और पैकेजिंग डिजाइन से लेकर उत्पादों का प्रचार करने वाली वेबसाइट तक बना देती है। यह विज्ञापन मजबूत संदेश देता है कि कुछ नया शुरू करने और परिवार में आर्थिक योगदान देने के लिए कभी बहुत देर नहीं होती। लेकिन आठ साल पहले महाराष्ट्र के बारामती की 30 वर्षीय मनीषा कांबटे के पास लेबल डिजाइन करने और वेबसाइट बनाने का कोई एआई टूल नहीं था। फिर भी उन्होंने मसालों और अचार का ऐसा सफल

कारोबार खड़ा किया, जिसने वित्तीय वर्ष 2024-25 में लगभग 1 करोड़ रुपए का कारोबार किया।किसान परिवार में जन्मी मनीषा ने कम उम्र में ही पिता को खो दिया था। इसके बावजूद उन्होंने अच्छे-से पढ़ाई की और दसवीं तक की शिक्षा पूरी की। लेकिन सामाजिक अपेक्षाओं ने उनके लिए दूसरा रास्ता तय कर रखा था। वे अपनी महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ातीं, इससे पहले ही उनकी शादी हो गई और वे अपने होमटाउन से 322 किलोमीटर दूर पुरंदर चली गईं।नया जीवन 17 सदस्यों वाले एक संयुक्त परिवार में शुरू हुआ, जहां सभी वित्तीय फैसले परिवार के सबसे बड़े सदस्य लेते थे। चाहे 100 रुपए हों या 1 रुपया, हर खर्च के लिए अनुमति जरूरी थी। परिवार के युवा सदस्यों को बहुत कम आर्थिक स्वतंत्रता थी। मनीषा को सबसे ज्यादा दुख तब होता, जब वे अपने स्कूल जाने वाले तीन बच्चों को चॉकलेट या स्नैक्स खरीदने के थोड़े-से पैसे भी नहीं दे पाती थीं। इन्हीं पलों ने उनके भीतर आर्थिक आत्मनिर्भरता हासिल करने का संकल्प मजबूत कर दिया। चूंकि उन्होंने खुद कई अवसर छूटते देखे थे, इसलिए वे चाहती थीं कि उनकी दो बेटियों और बेटे के पास जीवन में बेहतर विकल्प हों। अनेक ग्रामीण परिवारों की तरह उनका परिवार भी मानसून से पहले सालभर के मसाले तैयार करता था। मनीषा में मसाले मिलाने की स्वाभाविक प्रतिभा थी और उनके मसाले खास स्वाद के चलते लोकप्रिय होने लगे। शुरुआत में ग्रामीण महिलाएं उन्हें कच्चा माल देती थीं और वे मसाले पीसने व मिलाने के बदले प्रति किलोग्राम 30 रुपए कमाने लगीं। उनके जीवन का टर्निंग पॉइंट तब आया, जब एक राष्ट्रीयकृत बैंक ने 35 महिलाओं के लिए मसाला उत्पादन प्रशिक्षण आयोजित किया। मनीषा ने इसमें हिस्सा लेकर बिजनेस की बुनियादी बातें सीखीं और स्थानीय मेलों में उत्पाद बेचने लगीं। इसका उत्साहजनक रेस्पॉन्स मिला। मांग बढ़ी तो उन्होंने और ऋण लिए, कारोबार बढ़ाया और 20 महिलाओं को रोजगार दिया। आज उनका उद्यम हर आठ दिन में 2 टन अचार और 200 किलो मसाले बनाता है। बिजनेस पूर्णतः पंजीकृत है, खाद्य सुरक्षा मानकों का पालन करता है और उनके पास सभी जरूरी प्रमाणपत्र हैं। हालांकि, सबसे संतोषजनक उपलब्धि कारोबार के आंकड़े नहीं हैं। उनकी दोनों बेटियां अब ग्रेजुएट हैं और बेटा 11वीं में पढ़ रहा है। वे खुद के लिए जो आर्थिक आजादी तलाश रही थीं, वही उनकी भावी पीढ़ी के लिए शिक्षा के अवसरों में बदल गई। फंडा यह है कि एक बेटी को शिक्षित कीजिए तो वह न सिर्फ खुद का जीवन स्तर ऊपर उठाती है, बल्कि पूरे परिवार के लिए अधिक शिक्षित, आत्मविश्वास से भरा और आर्थिक रूप से सुरक्षित भविष्य भी तैयार करती है। (एन. रघुरामन)

हमें क्या चाहिए- संस्कृति में बदलाव या सख्त कार्रवाई

1. 'मैं डॉक्टर बनना चाहता था। मैं हमेशा अच्छे नंबर लाने के लिए पढ़ाई करता था। लेकिन जापानियों ने मुझे बताया कि पढ़ाई क्यों जरूरी है। वहां शिक्षा का मूल सिद्धांत यह है कि तकनीक में प्रगति जिज्ञासा की वजह से हुई है।' 2. 'पूरा देश स्वच्छ है। हमें वहां प्लास्टिक का टुकड़ा भी नहीं दिखेगा। मैं उनकी दयालुता, सहानुभूति और जिम्मेदारी की भावना से बहुत प्रभावित हुआ।' 3. 'मैं जापानियों का सिविक सेंस देखकर हैरान रह गया। वहां लोगों के चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती है।' ये बातें किसी महान शख्सियत ने नहीं कहीं, बल्कि गुरुवार को ये प्रतिक्रियाएं कर्नाटक के उन तीन स्टूडेंट्स की थीं, जो 56 भारतीय छात्रों के समूह के साथ काशिवा स्थित शिबुरा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी गए थे। वहां उन्होंने नोबेल पुरस्कार विजेताओं समेत प्रमुख वैज्ञानिकों की विशेष कक्षाओं में हिस्सा लिया। जापान की प्रमुख यूनिवर्सिटीज और रिसर्च संस्थानों का दौरा किया। जापानी हाईस्कूल छात्रों के साथ सामाजिक गतिविधियों में शामिल हुए और वहां की संस्कृति को महसूस किया। उसी गुरुवार को इस जगह से मीलों दूर कोलकाता में राज्य की नगरीय मामलों की मंत्री अग्निमित्रा पॉल ने घोषणा की कि 'अगले तीन महीने हम जागरूकता और इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण अभियान चलाएंगे। लोगों से आग्रह करेंगे कि वे सड़कों पर कचरा न फेंकें। तीन माह बाद 1 सितंबर से कचरा फैलाने वालों पर जुर्माना लगाएंगे।'इन बच्चों के लिए सबसे बड़ा सबक था कि वहां के स्कूलों में सिविक रेस्पॉन्सिबिलिटी, नैतिकता, सहानुभूति और धैर्य सिखाने पर ज्यादा जोर देते हैं। यह उस अनुभव से बिल्कुल अलग था, जिसके ये स्टूडेंट आदी थे। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मैथ्स, बोर्ड परीक्षाओं और कम उम्र से अंग्रेजी की दक्षता को अत्यधिक प्राथमिकता दी जाती है। भारत में सफलता को अकसर नंबर, रैंक और किताबी ज्ञान से मापते हैं। जबकि जापान में, खासकर शुरुआती और विशेष विकास के चरणों में, सफलता इससे मापी जाती है कि बच्चा अपनी रोजमर्रा की जिंदगी कितने अच्छे-से संभालता है, टीम को कितना सहयोग करता है और कितनी भावनात्मक मजबूती दिखाता है। अगर वहां के पाठ्यक्रम को करीब से देखें तो उसे जानबूझकर ऐसा बनाया गया है, ताकि स्वतंत्र और सिविक-माइंडेड वयस्क तैयार किए जा सकें। वहां कुकिंग और सिलाई भी सिखाई जाती है, जिसे 'कतैका' कहते हैं। यह कोई बेकार विषय नहीं, बल्कि 'होम इकॉनॉमिक्स' के तौर पर जापान में लड़के और लड़कियों दोनों के लिए अनिवार्य विषय है। स्टूडेंट्स इसे सिर्फ इसलिए नहीं सीखते कि बड़े होकर पैरेंट्स या घरेलू सहायकों पर निर्भर न रहें, बल्कि इसमें वे न्यूट्रिशनल बैलेंस, बजटिंग और कपड़ों की मरम्मत सीखते हैं। फिर आता है संगीत और खेल। वे इसे बौद्धिक विकास, भावनात्मक अभिव्यक्ति और सामूहिक सामंजस्य का जरूरी साधन मानते हैं। जापान में बचपन में भारी अकादमिक परीक्षाओं को जानबूझकर टाला जाता है। वहां मान्यता है कि स्कूल के शुरुआती सालों में बच्चों को परीक्षा के अंकों के आधार पर 'स्मार्ट' और 'स्टूगलिंग' श्रेणियों में बांटने के बजाय उनमें चरित्र, व्यवहार और समाज के प्रति लगाव को विकसित करना चाहिए। जापानी शिक्षा मंत्रालय इन व्यवस्थाओं को स्पष्ट रूप से 'इकिरु चिकारा' नामक सिद्धांत के इर्द-गिर्द बुनता है, जिसका अर्थ है- 'जीने का उत्साह।' इसका उद्देश्य तीन मुख्य स्तंभों के बीच संतुलन बनाना है। 1. शैक्षणिक योग्यता, महज रटने के लिए नहीं बल्कि समस्या सुलझाने के लिए। 2. समृद्ध मानवीय गुण, यानी नैतिकता, सहानुभूति और नागरिक जिम्मेदारी। 3. स्वास्थ्य और शारीरिक मजबूती, जो दृढ़ता और आत्मअनुशासन लाती है। जापानी स्कूलों का मतलब अकादमिक पढ़ाई से कहीं ज्यादा है। वे चरित्र निर्माण के संपूर्ण तंत्र के जैसे काम करते हैं, जहां नैतिकता, नागरिक कर्तव्य और सख्त सामाजिक अनुशासन को रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल किया जाता है। किताबों से परे स्टूडेंट्स स्कूल चलाने में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं, कठोर क्लब गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। फंडा यह है कि यह लड़ाई नैतिकता और दबाव के बीच की है। अगर आप भावी पीढ़ी के लिए यह जंग जीतना चाहते हैं तो उन्हें स्कूली दिनों में ही सहानुभूति का पाठ पढ़ाना चुनिए, ताकि हमें कार्रवाई के लिए कानून बनाने को मजबूर न होना पड़े। एन. रघुरामन

जमीन पर उतर रही कॉकरोच पार्टी,साथ कौन-कौन,सरकार कैसे निपटेगी,क्या किसी मूवमेंट की तैयारी!

पार्टी का संविधान, संगठन बनाने की प्रक्रिया, पद पाने वाले लोगों के कार्यकाल वगैरह के बारे में भी बताना होता है।एक पेच ये भी है कि हरियाणा में पानीपत के बेस्ड ऑनलाइन प्रचार का मटेरियल बनाते थे। अभिजीत आप के आईटी सेल के चीफ अंकित लाल को रिपोर्ट करते थे। एक इंटरव्यू में अभिजीत ने बताया कि को लेकर सरकार का रुख क्या है?जवाबः अभिजीत और उनकी सीजेपी पर आरोप हैं कि उनके पीछे एंटी नेशनल ताकतें और विदेशी फंडिंग है। भारतीय खुफिया

रहने वाले वकील सुधीर जाखर ने खुद को सीजेपी का राष्ट्रीय संयोजक बताते हुए 25 मई को इसे पार्टी के तौर पर रजिस्टर करने के लिए चुनाव आयोग में अप्लाई किया था। उन्होंने इसकी वजह बताते हुए कहा था, 'जब दीपके ने भारत आने से इनकार किया, तो हमें लगा कि कोई और इसका रजिस्ट्रेशन करवाकर दुरुपयोग करता है, इससे पूरा आंदोलन बेकार हो जाएगा। इसलिए हमने खुद इसका निर्णय उन्होंने निजी जिंदगी और आर्थिक स्थिरता के लिए आप छोड़कर बोस्टन यूनिवर्सिटी में अप्लाई किया था। एडमिशन मिल गया, तो वे अमेरिका शिफ्ट हो गए। किसान आंदोलन से लेकर महंगाई जैसे राजनीतिक मुद्दों पर अभिजीत एक्स अकाउंट पर केंद्र सरकार और पीएम पर निशाना साधते रहे हैं। सवाल-7: जेन-जी के अलावा सीजेपी से कौन-से बड़े चेहरे जुड़े, कहीं से फंडिंग भी मिल रही? जवाबः सीजेपी के प्रोटेस्ट में कई एजेंसी आईबी ने सीजेपी के पहले एक्स हैंडल को ब्लॉक करने का इनपुट दिया था। इसमें कहा गया, 'हैंडल का भड़काऊ कॉन्टेंट देश के युवाओं के बीच फैल रहा था। इससे देश की नेशनल सिक्योरिटी को खतरा हो सकता था।' इसके बाद सरकार ने एक्स को भारत में सीजेपी के हैंडल पर रोक लगाने का निर्देश दिया था। 22 मई को बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे ने एक्स पर लिखा था, 'अभिजीत को बोस्टन जाने के लिए किसने पैसा

लिया।' हालांकि इस पर अभिजीत का कोई बयान नहीं आया है। सवाल-5: राजनीतिक पार्टी बन गई, तो क्या चुनाव निशान 'कॉकरोच' मिलेगा? जवाबः फिलहाल कॉकरोच चुनाव निशान किसी को नहीं मिल सकता। दरअसल, चुनाव आयोग के इलेक्शन सिंबल रिजर्वेशन एंड अलॉटमेंट ऑर्डर, 1968 के तहत नई रजिस्टर्ड पार्टियों को 'फ्री सिंबल लिस्ट' से चुनाव निशान मिलता है। इसमें लैंडलाइन फोन, लैपटॉप, टीवी, ताला-चाबी, फूलगोभी, साबुनदानी और स्टेपलर जैसे 200 से ज्यादा सिंबल हैं। 1991 से चुनाव आयोग ने पक्षी या जानवरों से जुड़े सिंबल देने बंद कर दिए हैं। कॉकरोच को कीट की श्रेणी में रखा जाता है। इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है कि इसे आधिकारिक तौर पर जानवरों में रखा जाएगा या नहीं। सीजेपी ने अपने सिंबल में मोबाइल फोन की स्क्रीन के अंदर एक कोचरोच दिखाया था। अगर वे मोबाइल फोन का सिंबल मांगते हैं, तो भी मुश्किल है, क्योंकि मोबाइल फोन 'फ्री सिंबल' की लिस्ट में नहीं है। सवाल-6: क्या अभिजीत दीपके ही इसके प्रेसिडेंट बनेंगे, उनकी कहानी क्या है? जवाबः अभी तक सीजेपी का चेहरा अभिजीत दीपके हैं। उनके भारत आने को लेकर हो रही तैयारियां और सीजेपी की प्रेस कॉन्फ्रेंस से ये साफ है कि आगे भी अभिजीत ही मुख्य भूमिका में होंगे। 30 साल के अभिजीत महाराष्ट्र के संभाजी नगर के रहने वाले डिजिटल मीडिया स्ट्रैटेजिस्ट हैं। अभिजीत ने पुणे से पत्रकारिता की पढ़ाई की है। फिलहाल, अमेरिका की बॉस्टन यूनिवर्सिटी में पब्लिक रिलेशंस से मास्टर्स की पढ़ाई कर रहे हैं। अभिजीत 2020 से 2022 तक आम आदमी पार्टी के सोशल मीडिया स्ट्रैटेजिस्ट रहे हैं। 2020 के दिल्ली विधानसभा चुनावों में अभिजीत आप के लिए वायरल मीम बड़ी हस्तियां शामिल हैं- सोनम वांगचुक, शिक्षाविदः वांगचुक ने 2 जून को एक्स पर वीडियो जारी करके कहा, 'मैं सीजेपी के आंदोलन से जुड़ने आ रहा हूं। सीजेपी वाले देशप्रेमी लोग हैं, आप भी उनके साथ जुड़ना चाहिए।' प्रकाश राज, फिल्म अभिनेताः अभिनेता प्रकाश राज ने एक्स पर लिखा, 'मैं शूटिंग के लिए फिलहाल दिल्ली से बहुत दूर हूं, लेकिन फिर भी मैं सीजेपी के आंदोलन में पहुंचे की पूरी कोशिश करूंगा।' हालांकि अभी प्रकाश राज के पहुंचने की जानकारी नहीं है। अमित जोगी, जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ अध्यक्षः छत्तीसगढ़ के पहले सीएम अजीत जोगी के बेटे और जेसीसी अध्यक्ष अमित जोगी ने कहा था, 'छत्तीसगढ़ में कॉकरोच को झींगुरा कहते हैं और जंतर-मंतर पर झींगुरा पहुंच रहा है। हम सीजेपी को समर्थन देने वालीं देश की पहली पार्टी बनेंगे।' इसके अलावा एक्टर अतुल कुलकर्णी, दिल्ली यूनिवर्सिटी स्टूडेंट यूनियन के पूर्व अध्यक्ष रौनक खत्री, स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया यानी एसएफआई की अध्यक्ष आइशे घोष भी प्रोटेस्ट में शामिल हैं। अभी तक सीजेपी की फंडिंग के कोई सोर्स का भी कोई पुख्ता सबूत नहीं है।

3 जून को प्रवक्ता सौरव दास ने कहा, 'हमें फंडिंग की जरूरत क्यों पड़ेगी? हमारे पीछे जो पार्टी का पोस्टर लगा है, वो 200 रुपए का है, लोग प्रोटेस्ट में अपने खर्चे पर आ सकते हैं। ये नैरेटिव आंदोलन को भटकाने के लिए खड़ा किया जा रहा है।

' सीजेपी की ऑफिशियल वेबसाइट के मुताबिक, 'पार्टी पूरी तरह कम्युनिटी फंडिंग यानी आंदोलन से जुड़े लोगों से मिले पैसों पर काम करती है।

किसी राजनीतिक संगठन या प्राइवेट कंपनी से डोनेशन नहीं लेगी।' सवाल-8: कॉकरोच पार्टी दिया? क्या सोरोस फाउंडेशन उनके रहने-खाने का खर्च उठा रहा है? क्या विपक्षी दल देश को तोड़ने के लिए विदेशी ताकतों से मदद ले रहे हैं?' सीजेपी ने कहा है कि वह शांतिपूर्ण प्रोटेस्ट करेंगे। अगर मौके पर मौजूद फोर्सेज से संघर्ष की स्थिति बनी, तो अभिजीत और साथियों को हिरासत में भी लिया जा सकता है।

हालांकि इससे कॉकरोच पार्टी के पक्ष में सहानुभूति की लहर उठने का खतरा है। फिलहाल ऐसा लग रहा है कि सरकार प्रोटेस्ट की अनुमति देकर कॉकरोच पार्टी को एक सटायर मूवमेंट की तरह ही ट्रीट कर रही है, जिससे उन्हें कोई नुकसान नहीं होने वाला। सवाल-9: क्या ऐसी किसी पार्टी के लिए फिलहाल भारत की राजनीति में जगह है? जवाबः कॉकरोच पार्टी के उभार की टाइमिंग और मुद्दे इसे मौजूदा राजनीति में प्रासंगिक बनाते हैं।

पॉलिटिक एनालिस्ट योगेंद्र यादव कहते हैं, 'देश के भीतर एक छटपटाहट है।

जब सरकार संस्थाओं पर कब्जा कर लेती है और पूर्णसत्ता स्थापित करती है, तब विद्रोह अनपेक्षित जगहों से पैदा होता है।

जैसे- 1971 में इंदिरा गांधी की भारी जीत के बाद 1974 में जयप्रकाश आंदोलन हुआ। 2009 में कांग्रेस की जीत के बाद 2011 में अन्ना आंदोलन और 2019 में पीएम मोदी के दूसरी बार सत्ता में आने के 2 साल बाद किसान आंदोलन हुआ।

' वहीं कांग्रेस सांसद शशि थरूर कहते हैं, 'युवा निराश है, इसीलिए इससे जुड़ रहा है। उम्मीद है कि इसके पीछे जो लोग हैं, वो इस एनर्जी को मेनस्ट्रीम पॉलिटिक्स में लाने का रास्ता निकाल लेंगे या फिर अपने वोट के जरिए बदलाव की आवाज बनेंगे।' चलिए समझते हैं मामले को सवाल जवाब के माध्यम से।

पुतिन ने भारत को सुखोई-57 ऑफर किया,इस पांचवी जनरेशन फाइटर जेट की तकनीक भी शेयर करेंगे, अमेरिका से बोले- भारत पर दबाव डालना बेकार

सेंट पीटर्सबर्ग। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भारत को सुखोई एसयू -57 स्टेल्थ फाइटर जेट को है।' पुतिन ने अमेरिका-भारत के संबंधों पर कहा कि यूएस कई मुद्दों पर दबाव बनाने की कोशिश कर सुखोई प्रोजेक्ट में शामिल होने का प्रस्ताव दिया गया था, उस समय भारत ने एसयू-57 प्रोजेक्ट में रुचि 'भारत और चीन के साथ रूस के रिश्ते अलग-अलग और स्वतंत्र हैं। भारत के साथ रूस की दोस्ती से

लेकर बड़ा ऑफर दिया है। उन्होंने कहा है कि रूस, भारत के साथ मिलकर इस विमान का विकास और उत्पादन करने के लिए तैयार है। साथ ही रूस जरूरी रक्षा तकनीकें साझा करने के लिए भी तैयार है।पुतिन ने गुरुवार को सेंट पीटर्सबर्ग इंटरनेशनल इकोनॉमिक फोरम के दौरान अंतरराष्ट्रीय मीडिया से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने कहा कि पहले भी भारत को इसे बनाने के प्रोजेक्ट में साझेदार बनने का ऑफर दिया था। उस समय भारत ने कहा था कि रूस पहले इस प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाए, उसके बाद भारत इसमें शामिल होने पर विचार करेगा। पुतिन ने कहा- 'यह विमान हमारा जॉइंट प्रोजेक्ट हो सकता था। हमने इसे अपने दम पर विकसित किया, लेकिन अब भी हम भारत के साथ इस क्षेत्र में काम करने के लिए तैयार हैं। हम भारत को यह विमान देने और इसके आगे के विकास में साझेदारी करने के लिए तैयार हैं। इसमें हमें कोई समस्या नजर नहीं आती। यही बात एयर डिफेंस सिस्टम पर भी लागू होती रहा है, लेकिन इस तरह की कोशिशें बेकार हैं। भारत इसका विरोध करेगा। पुतिन बोले- एसयू-57 दुनिया का सबसे अच्छे फाइटर जेट्स में से एक-पुतिन ने सुखोई एसयू-57 की तारीफ करते हुए कहा कि यह पांचवीं पीढ़ी का लड़ाकू विमान है और उनकी नजर में दुनिया के सबसे अच्छे फाइटर जेट्स में से एक है। इसमें स्टेल्थ क्षमता, उच्च गतिशीलता, आधुनिक एवियोनिक्स और मल्टी-रोल कॉम्बैट क्षमताएं हैं। सुखोई एसयू-57 हवा, जमीन और समुद्री लक्ष्यों पर हमला करने में सक्षम है। दुनिया में कुछ ही पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान हैं जिनमें एसयू-5 के साथ चीन का जे-35 और अमेरिका के एफ-35 शामिल हैं। भारतीय वायुसेना के बेड़े में इस समय सबसे एडवांस जनरेशन का फाइटर जेट फ्रांसीसी मूल का राफेल है। इसे तकनीकी रूप से 4.5 जनरेशन का लड़ाकू विमान माना जाता है। भारत ने सुखोई प्रोजेक्ट से जुड़ने का ऑफर ठुकराया था- मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक रूस ने भारत को 2018 के आसपास दिखाई थी, लेकिन भारतीय वायुसेना का मानना था कि यह विमान उसकी सभी जरूरतों को पूरा नहीं करता। उस दौर की कई रिपोर्टों में दावा किया गया था कि वायुसेना इसकी स्टेल्थ क्षमताओं से पूरी तरह संतुष्ट नहीं थी। इसके अलावा तकनीक हस्तांतरण (टेक्नोलॉजी ट्रांसफर) को लेकर भी दोनों पक्षों के बीच मतभेद थे। गौरतलब है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने पिछले वर्ष प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की व्हाइट हाउस यात्रा के दौरान भारत को एफ-35 की पेशकश की थी। अब पुतिन के नए प्रस्ताव के बाद माना जा रहा है कि रूस इन पुरानी चिंताओं को दूर करने की कोशिश कर रहा है। पुतिन बोले- रूस, भारत-चीन के रिश्तों में दखल नहीं देगा-पुतिन ने कहा है कि भारत और चीन के रिश्ते बेहद संवेदनशील और जटिल हैं, इसलिए रूस उनमें दखल नहीं देना चाहता। उन्होंने भरोसा जताया कि मोदी और जिनपिंग बातचीत के जरिए सीमा विवाद समेत सभी अहम मुद्दों का समाधान निकाल सकते हैं। उन्होंने कहा- चीन को कोई परेशानी नहीं होती और चीन के साथ रूस के करीबी संबंधों से भारत के साथ उसके रिश्तों पर भी कोई असर नहीं पड़ता।' रूसी राष्ट्रपति ने भारत, रूस और चीन के त्रिपक्षीय मंच का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि एक समय उन्होंने भारत और चीन के नेताओं को रूस में एक साथ मिलने का सुझाव दिया था, जिसके बाद यह मंच बना। बाद में इसी तरह के सहयोग ने ब्रिक्स जैसे बड़े समूह की नींव रखने में भी मदद की। पुतिन ने भारत-पाकिस्तान संबंधों पर भी पुतिन ने टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि रूस भारत और पाकिस्तान के बीच मौजूद मुश्किल मुद्दों को समझता है। हालांकि उन्होंने इस पर ज्यादा विस्तार से बात नहीं की। जब उनसे पूछा गया कि क्या पाकिस्तान चीन के प्रभाव में है, तो पुतिन ने इससे सहमति नहीं जताई। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान एक बड़ा देश है और उसके कई देशों के साथ अलग-अलग तरह के संबंध हैं। हालांकि उन्होंने यह भी माना कि पाकिस्तान के लिए चीन के साथ सहयोग काफी महत्वपूर्ण है।

वर्ल्ड बैंक में एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर बने इकोनॉमिस्ट नीलकंठ मिश्रा,परमेश्वरन अय्यर की जगह लेंगे

नयी दिल्ली। इकोनॉमिस्ट और मार्केट स्ट्रैटेजिस्ट नीलकंठ मिश्रा को वर्ल्ड बैंक में भारत का नया एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर नियुक्त किया है। कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने उनके नाम को मंजूरी दी है। वे वॉशिंगटन स्थित वर्ल्ड बैंक के हेडक्वार्टर में 3 साल तक भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। मिश्रा मौजूदा एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर परमेश्वरन अय्यर की जगह लेंगे। जब तक नीलकंठ मिश्रा अपना पद नहीं संभाल लेते, तब तक अय्यर का कार्यकाल बढ़ा दिया गया है। वर्ल्ड बैंक में भारत के लिए क्या काम करेंगे मिश्रा? एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर के रूप में नीलकंठ मिश्रा वर्ल्ड बैंक के बोर्ड में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। यह बोर्ड वर्ल्ड बैंक के लोन ऑपरेशंस, डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स, फाइनेंशियल पॉलिसी और गवर्नेंस से जुड़े फैसलों की निगरानी करता है। भारत के लिए इस पद को इकोनॉमिक डिप्लोमेसी के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके जरिए ग्लोबल डेवलपमेंट फाइनेंसिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट और इकोनॉमिक ग्रोथ जैसे मुद्दों पर होने वाली चर्चाओं में मदद मिलती है। उनकी यह नियुक्ति ऐसे समय में हुई है जब भारत अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों में अपनी मजबूत आवाज और ग्लोबल डेवलपमेंट एजेंडे को प्रभावित करने की कोशिश कर रहा है। पीएम की आर्थिक सलाहकार परिषद के भी सदस्य हैं मिश्रा-कॉर्पोरेट सेक्टर में बड़ी जिम्मेदारियां संभालने के साथ-साथ मिश्रा पब्लिक पॉलिसी और सरकारी समितियों में भी काफी एक्टिव रहे हैं। वे प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के पार्ट-टाइम सदस्य हैं, जो आर्थिक और नीतिगत मामलों पर सीधे सरकार को सलाह देती है। इसके अलावा वे आधार का मैनेजमेंट करने वाली संस्था भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण के पार्ट-टाइम चेयरमैन भी हैं।

केजीएमयू में 244 ऑपरेशन में एक मरीज आयुष्मान का,भुगतान वाली सर्जरी ज्यादा हुईं

लखनऊ। केजीएमयू के नेत्र रोग विभाग में दवाएं और मोतियाबिंद ऑपरेशन में इस्तेमाल होने वाले लेंस निजी दुकानों से डॉक्टर की कार्यशैली पर केंद्रित हुई जांच-सूत्रों के मुताबिक विभाग के अन्य चिकित्सकों की तुलना में एक डॉक्टर पर HRF से उपलब्ध

लिखने के आरोपों की जांच में नया खुलासा हुआ है। जांच के दौरान पता चला कि विभाग के एक डॉक्टर ने पिछले छह महीनों में 244 मोतियाबिंद ऑपरेशन किए, लेकिन इनमें से केवल एक सर्जरी ही आयुष्मान भारत योजना के तहत की गई। जांच में हॉस्पिटल रिवॉल्विंग फंड (एचआरएफ) के तहत उपलब्ध कराए गए लेंसों के उपयोग को लेकर भी अनियमितता सामने आई है। रिकॉर्ड के अनुसार विभाग में एचआरएफ लेंसों का इस्तेमाल करीब 70 प्रतिशत मामलों में ही हुआ, जबकि यह अनुपालन 95 से 100 प्रतिशत के बीच होना चाहिए था। अधिकारियों का कहना है कि एचआरएफ के माध्यम से लगभग सभी प्रकार के लेंस उपलब्ध हैं।

50फीसदी मोतियाबिंद ऑपरेशन सरकारी योजनाओं से-जांच अधिकारियों की ओर से खंगाले गए रिकॉर्ड के अनुसार बाकी सभी मोतियाबिंद और अन्य सर्जरियां भुगतान लेकर की गईं। अधिकारियों का कहना है कि विभाग में सामान्य तौर पर करीब 50 प्रतिशत मोतियाबिंद ऑपरेशन आयुष्मान भारत और अन्य सरकारी कैशलेस योजनाओं से होते हैं। ऐसे में 244 ऑपरेशन में सिर्फ एक आयुष्मान मरीज मिलना कई सवाल खड़े कर रहा है। एक लेंसों का अपेक्षाकृत कम इस्तेमाल करने के आरोप हैं। जांच समिति अब इस पहलू की गहराई से पड़ताल कर रही है और विभिन्न रिकॉर्ड का मिलान कर रही है। मरीजों को बाहर भेजने की आशंका-जांच एजेंसियां यह भी पता लगाने में जुटी हैं कि कहीं भुगतान वाली सर्जरी को प्राथमिकता देकर मरीजों को निजी दुकानों से लेंस और दवाएं खरीदने के लिए तो नहीं कहा गया।

इसी बिंदु पर सबसे ज्यादा फोकस किया जा रहा है। शिकायत के बाद खुली जांच की परतें-गोरखपुर के एक मरीज की शिकायत मुख्यमंत्री जनता दर्शन तक पहुंचने के बाद मामले की जांच शुरू हुई थी। शिकायत में आरोप लगाया गया था कि अस्पताल में उपलब्ध दवाओं और लेंसों के बावजूद उन्हें बाहर से खरीदारी करने के लिए कहा गया। इसके बाद गठित जांच समिति ने रिकॉर्ड खंगालना शुरू किया, जिसमें अब कई नए तथ्य सामने आ रहे हैं।

रिपोर्ट के इंतजार में प्रशासन-केजीएमयू प्रवक्ता डॉ. केके सिंह ने बताया कि फिलहाल जांच जारी है। समिति ऑपरेशन रिकॉर्ड, मरीजों के दस्तावेजों और विभागीय अभिलेखों का परीक्षण कर रही है। अंतिम रिपोर्ट के आधार पर आगे की प्रशासनिक कार्रवाई तय की जाएगी।

एमपी सिविल सेवा के नए नियम

2 से अधिक बच्चे तो नहीं कर सकेंगे सरकारी नौकरी,प्रोबेशन के 6 माह बाद कोई एक्शन नहीं तो ऑटो परमानेंट होंगे

भोपाल। मध्य प्रदेश सरकार सिविल सेवा नियमों में बड़ा बदलाव करने जा रही है। सामान्य प्रशासन विभाग (जीएडी) ने मध्य प्रदेश सिविल सेवा (सेवा की सामान्य

शर्तें) नियम, 2026 का नया मसौदा (ड्राफ्ट) जारी कर दिया है। इसकी सबसे बड़ी बात यह है कि सरकारी नौकरी के लिए दो से अधिक बच्चों की पाबंदी को बरकरार रखा गया है, जबकि पिछले साल खुद जीएडी ने ही इस पाबंदी को हटाने का प्रस्ताव तैयार किया था, जिसे मुख्यमंत्री की सैद्धांतिक सहमति भी मिल गई थी, लेकिन नए नियमों में सरकार इस फैसले से पलट गई है। बता दें 24 साल पहले साल 2001 में प्रदेश की तत्कालीन दिग्विजय सिंह सरकार ने मध्य प्रदेश सिविल सेवा (सेवा की सामान्य शर्तें) नियम, 1961 में संशोधन करते हुए यह प्रतिबंध लागू किया था। क्या कहता है दो बच्चों वाला नियम? नए ड्राफ्ट के नियम 5 और 6 के तहत पात्रता और अपात्रता की शर्तें तय की गई हैं। इसके अनुसार- कोई भी उम्मीदवार जिसकी दो से अधिक जीवित संतानें हैं और उनमें से किसी एक का जन्म 26 जनवरी 2001 को या उसके बाद हुआ है, वह सरकारी नौकरी के लिए पात्र नहीं होगा। जुड़वां बच्चों का मामलाः यदि किसी का पहले से एक बच्चा है और अगले प्रसव (डिलीवरी) में जुड़वां या उससे ज्यादा बच्चे होते हैं तो वह अपात्र नहीं माना जाएगा। सरकार कर्मचारियों की भर्ती, प्रोबेशन और सीनियरिटी से जुड़े नए नियम भी ला रही है। ये राज्य की अधिकांश सरकारी सेवाओं पर लागू होंगे। नए नियमों के तहत अब अगर कोई कर्मचारी प्रोबेशन पीरियड पर है और अवधि समाप्त होने के 6 महीने के भीतर विभाग उसके स्थायीकरण पर कोई निर्णय नहीं लेता तो उसे ऑटोमैटिकली स्थायी मान लिया जाएगा। यदि एक ही साल में सीधी भर्ती, अनुकंपा नियुक्ति और प्रमोशन) से लोग आते हैं तो सीनियरिटी सबसे पहले सीधी भर्ती वाले को, फिर अनुकंपा और आखिर में प्रमोशन वाले को मिलेगी, किसी यदि तीनों का नियुक्ति आदेश एक ही तारीख को निकलता है, तो प्रमोटेड व्यक्ति सबसे सीनियर माना जाएगा। इसके बाद सीधी भर्ती और फिर अन्य का नंबर आएगा। हर साल अपडेट होगी ग्रेडेशन लिस्टः हर साल 1 जनवरी की स्थिति में 31 मार्च तक कर्मचारियों की नई ग्रेडेशन लिस्ट अपडेट की जाएगी। इन 4 परिस्थितियों में भी नौकरी के लिए होंगे अयोग्य-एक से अधिक जीवनसाथीः यदि किसी व्यक्ति का एक से अधिक जीवित जीवनसाथी है, तो वह अपात्र होगा (विशेष मामलों में छूट संभव)। मेडिकल अनफिटः शारीरिक या मानसिक रूप से अनफिट पाए जाने पर नियुक्ति नहीं होगी। चारित्रिक दागः नैतिक अधोपतन या चारित्रिक मामलों से जुड़े अपराध में दोषी पाए जाने पर नौकरी नहीं मिलेगी।बर्खास्त कर्मचारीः केंद्र, राज्य या स्थानीय निकाय से नौकरी से हटाए गए लोग अपात्र होंगे। मंत्रालय अधिकारी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष सुधीर नायक ने ड्राफ्ट के एक नियम पर आपत्ति जताई है।

नियम के मुताबिक, यदि किसी उम्मीदवार के खिलाफ कोई आपराधिक मामला लंबित है, तो अंतिम फैसला आने तक उसकी जॉइनिंग रोक दी जाएगी। मंत्रालय अधिकारी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष सुधीर नायक के मुताबिक- मारे देश में किसी को परेशान करने के लिए भी झूठी एफआईआर दर्ज करा दी जाती है और कोर्ट से फैसला आने में सालों लग जाते हैं।

ऐसे में निर्दोष होने पर भी व्यक्ति लंबे समय तक नौकरी से वंचित रह जाएगा, जो कि गलत है। जीएडी की वेबसाइट पर 15 जून तक दे सकते हैं सुझाव-जीएडी के अपर सचिव अजय कटेसरिया के अनुसार, इस नए मसौदे पर कर्मचारी संगठनों और आम जनता से सुझाव मांगे गए हैं। 15 जून तक जीएडी की वेबसाइट पर राय दी जा सकती है। सुझावों के बाद फाइनल ड्राफ्ट कैबिनेट की मंजूरी के लिए जाएगा और यह नियम इसी साल जुलाई से लागू हो सकते हैं।

दोनों पैरों से दिव्यांग राहुल को मिला सहारा, जिलाधिकारी ने भेंट की ट्राई साइकिल,जनसुनवाई में संवेदनशील पहल, ट्राई साइकिल पाकर भावुक हुए राहुल; आंखों से छलक पड़े खुशी के आंसू

ट्राई साइकिल बनी राहुल की नई उम्मीद,जिलाधिकारी की संवेदनशील पहल,जनसुनवाई में मिला सहारा, दिव्यांग राहुल के चेहरे पर लौटी मुस्कान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनसुनवाई कार्यक्रम के दौरान उस समय भावुक क्षण देखने को मिला, जब जिलाधिकारी श्री

चर्चित गौड़ ने दोनों पैरों से दिव्यांग श्री राहुल कुमार पुत्र श्री रतन प्रसाद, निवासी चोपन मार्केट, सब्जी मंडी के पास को ट्राई साइकिल प्रदान की।

वर्षों से आवागमन की कठिनाइयों से जूझ रहे राहुल को जब ट्राई साइकिल मिली तो उनके चेहरे पर खुशी साफ झलक उठी और उनकी आंखें नम हो गईं। राहुल कुमार दोनों पैरों से दिव्यांग हैं, जिसके कारण उन्हें अपने दैनिक कार्यों एवं आवागमन में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। जनसुनवाई के दौरान उनकी समस्या जिलाधिकारी के संज्ञान में आने पर तत्काल संवेदनशीलता दिखाते हुए उन्हें ट्राई साइकिल उपलब्ध कराई गई। ट्राई साइकिल प्राप्त करने के बाद राहुल ने भावुक होकर 30प्र0 शासन एवं जिला प्रशासन का आभार व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि यह सहायता उनके लिए केवल एक साधन नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। अब वे अपने दैनिक कार्य पहले की अपेक्षा अधिक सुगमता से कर सकेंगे।

इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि शासन की प्राथमिकता समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहायता पहुंचाना है। दिव्यांगजन समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और उन्हें सम्मानजनक एवं आत्मनिर्भर जीवन उपलब्ध कराना प्रशासन की जिम्मेदारी है।

उन्होंने कहा कि पात्र दिव्यांगजनों को शासन की सभी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ समयबद्ध रूप से उपलब्ध कराया जाएगा।

अपहरण के दोषी सरवन कुमार को 4 वर्ष की कैद,10 हजार रुपये अर्थदंड, न देने पर दो माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी

जेल में बितायी अवधि सजा में होगी समाहित,करीब डेढ़ वर्ष पूर्व 15 वर्षीय किशोरी के अपहरण का मामला

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। करीब डेढ़ वर्ष पूर्व 15 वर्षीय किशोरी के अपहरण के मामले

में अपर सत्र न्यायाधीश एफटीसी/ ,सीएडब्लू सोनभद्र बिपिन कुमार तृतीय की अदालत ने शनिवार को सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर दोषी सरवन कुमार को 4 वर्ष की कैद व 10 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर दो माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बिताई अवधि सजा में समाहित होगी। अभियोजन पक्ष के मुताबिक दुद्धी थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी पीड़िता के पिता ने 29 जनवरी 2024 को दुद्धी थाने में दी तहरीर में आरोप लगाया था कि 23 जनवरी 2024 को रात्रि 2 बजे उसकी 15 वर्षीय बेटी को बहला फुसलाकर सरवन कुमार पुत्र लालकेश्वर निवासी झारोकला, थाना दुद्धी, जिला सोनभद्र कहीं भगा ले गया है। इसके पहले भी सरवन उसकी बेटी को भगा कर ले गया था। लेकिन आपसी सुलह समझौता के बाद मामला शांत हो गया था। आवश्यक कार्रवाई करें। इस तहरीर पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर मामले की विवेचना किया और पर्याप्त सबूत मिलने पर विवेचक ने कोर्ट में चार्जशीट दाखिल किया था। मामले की सुनवाई करते हुए कोर्ट ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने, गवाहों के बयान एवं पत्रावली का अवलोकन करने के बाद दोषी सरवन कुमार को 4 वर्ष की कैद व 10 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर दो माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बितायी अवधि सजा में समाहित होगी। अभियोजन पक्ष की ओर से सरकारी वकील सत्यप्रकाश त्रिपाठी ने बहस की।

जिलाधिकारी के नेतृत्व में सोनभद्र ने रचा नया कीर्तिमान, मात्र 7 दिनों में 80 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त कर प्रदेश में दूसरा स्थान हासिल किया

मूल्यांकन सूची पुनरीक्षण अभियान को मिली ऐतिहासिक सफलता, 4 दिनों में 45 प्रतिशत तथा 7 दिनों में 80 प्रतिशत कार्य पूर्ण,संपत्तियों के वैज्ञानिक एवं पारदर्शी मूल्यांकन की दिशा में सोनभद्र की बड़ी छलांग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद सोनभद्र में आगामी जुलाई माह से लागू होने वाली नई मूल्यांकन सूची (सर्किल रेट) के निर्धारण हेतु जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ के निर्देशन में चलाए जा रहे विशेष अभियान ने उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है। जिलाधिकारी के सतत अनुश्रवण, प्रभावी रणनीति एवं सभी संबंधित विभागों के समन्वित प्रयासों के परिणामस्वरूप जनपद ने प्रदेश स्तर पर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। विशेष खसरा फीडिंग अभियान के अंतर्गत मात्र 4 दिनों में लगभग 45 प्रतिशत कार्य पूर्ण कर लिया गया तथा केवल 7 दिनों में ही 80 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करते हुए सोनभद्र ने प्रदेशीय रैंकिंग में उल्लेखनीय सुधार दर्ज कर प्रदेश में दूसरा स्थान प्राप्त कर लिया है। यह उपलब्धि जनपद प्रशासन की

कार्यकुशलता एवं अधिकारियों-कर्मचारियों की प्रतिबद्धता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। संपत्तियों के यथार्थ एवं वैज्ञानिक मूल्यांकन में खसरा संख्याओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन्हीं के आधार पर भूमि की वास्तविक स्थिति, उपयोगिता तथा मूल्य को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का सटीक आकलन किया जाता है। जिलाधिकारी के निर्देशानुसार जनपद की सभी तहसीलों में युद्धस्तर पर अभियान चलाकर खसरा संख्याओं की ऑनलाइन फीडिंग सुनिश्चित की जा रही है।अभियान के अंतर्गत प्रत्येक भूमि की अवस्थिति का विस्तृत विवरण भी संकलित किया जा रहा है। यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि भूमि राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य राजमार्ग अथवा अन्य मार्गों से किस प्रकार जुड़ी हुई है। साथ ही भूमि के आसपास उपलब्ध आवासीय, व्यावसायिक एवं अन्य विकासात्मक गतिविधियों का भी विवरण दर्ज किया जा रहा है। इससे संपत्तियों का बाजार मूल्य अधिक पारदर्शी, तर्कसंगत एवं वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप निर्धारित किया जा सकेगा। जनपद स्तर पर उपनिबंधक, राजस्व विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी तथा अन्य संबंधित विभागों के संयुक्त प्रयासों से यह कार्य निरंतर प्रगति पर है। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने निर्देशित किया है कि मूल्यांकन सूची का निर्माण स्थानीय परिस्थितियों, भूमि की वास्तविक उपयोगिता तथा बाजार की वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए किया जाए, जिससे आमजन को पारदर्शी, न्यायसंगत एवं व्यवहारिक व्यवस्था का लाभ प्राप्त हो सके। सोनभद्र की यह उपलब्धि न केवल प्रदेश में जनपद की कार्यक्षमता का परिचायक है, बल्कि भविष्य में अधिक सटीक एवं पारदर्शी सर्किल रेट निर्धारण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी सिद्ध होगी। जिला सूचना कार्यालय, सोनभद्र द्वारा जनहित में प्रसारित।

सोशल मीडिया पर रिश्वत लेने का वीडियो वायरल होने के मामले में जिलाधिकारी ने की तत्काल कार्रवाई, राजस्व निरीक्षक निलंबित

शिकायतकर्ताओं की शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से किया जाये सुनिश्चित-जिलाधिकारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। शासन की मन्शा के अनुरूप जिले की चारों तहसीलों में जून महीने के प्रथम शनिवार को ''सम्पूर्ण समाधान दिवस'' का आयोजन किया गया, सम्पूर्ण समाधान दिवस दुद्धी में जिलाधिकारी

श्री चर्चित गौड़, अपर पुलिस अधीक्षक ऋषभ रुणवाल (आपरेशन) द्वारा शिकायतकर्ताओं की शिकायतों को सुना गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस में भूमि विवाद से सम्बन्धित प्राप्त हुए, मामलों को स्थलीय स्थिति की जॉच करते हुए टीम द्वारा प्रकरणों की स्थलीय जॉच कर निस्तारण कराने के निर्देश सम्बन्धित अधिकारी को दिये। इस दौरान जनपद में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान भाजपा मण्डल अध्यक्ष श्री दीपक शाह द्वारा जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ के समक्ष एक शिकायत प्रस्तुत की गई। शिकायत में अवगत कराया गया कि एक राजस्व निरीक्षक का रिश्वत लेते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से प्रसारित हो रहा है, तथा संबंधित के विरुद्ध अब तक कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं की गई है। जिलाधिकारी शिकायत को अत्यंत गंभीरता से लेते हुए तत्काल मामले का संज्ञान लिया। प्रथम दृष्टया उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान ही राजस्व निरीक्षक श्री अखिलेश कुमार शुक्ला को जिलाधिकारी ने तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिए तथा प्रकरण की विस्तृत जांच के निर्देश भी दिए गए। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने स्पष्ट रूप से कहा कि जनपद में भ्रष्टाचार, अनियमितता एवं कर्तव्यों के प्रति लापरवाही किसी भी दशा में स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप पारदर्शी एवं जवाबदेह प्रशासन स्थापित करना सर्वोच्च प्राथमिकता है। यदि किसी भी अधिकारी या कर्मचारी के विरुद्ध भ्रष्टाचार अथवा अनुचित आचरण की शिकायत प्राप्त होती है और जांच में आरोप सत्य पाए जाते हैं, तो संबंधित के विरुद्ध कठोर एवं नियमानुसार कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान जिलाधिकारी के समक्ष सामुदायिक स्वस्थ केंद्र दुद्धी में महिला चिकित्सक न होने के शिकायत प्राप्त हुई जिसपर जिलाधिकारी ने तात्कालिक प्रभाव से संज्ञान में लेकर डॉ0 पल्लवी सिन्हा, महिला चिकित्साधिकारी सामु0स्वा0केन्द्र, म्योरपुर को सप्ताह में दो दिन के लिए सामु0स्वा0केन्द्र, दुद्धी पर कार्य करने हेतु आदेशित किए। इस दौरान जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि शिकायतों के निस्तारण के बाद शिकायतकर्ताओं का फीडबैक लेते हुए शिकायतों का निस्तारण किया जाये, जिससे कि शिकायतकर्ता को किसी प्रकार की समस्या न हो और उनके प्रकरण का निस्तारण समय से किया जा सके। उन्होने कहा कि प्रत्येक प्रकरण को गम्भीरता से लेकर जॉच कर निस्तारण आख्या प्रस्तुत की जाये। सम्पूर्ण समाधान दिवस के मौके पर जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़, अपर पुलिस अधीक्षक (आपरेशन) उप जिलाधिकारी दुद्धी श्री निखिल यादव ने 101 शिकायतें सुनते हुए, मौके पर ही 01 मामलें निस्तारित किये गये इस प्रकार तहसील दिवस दुद्धी में कुल 10 मामले निस्तारित हुए, बाकी 91 प्रकरणों को समयबद्ध तरीके से निस्तारित करने के निर्देश सम्बन्धित को दिये गये। इस मौके पर तहसीलदार दुद्धी, नायब तहसीलदार सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहें। 02-सम्पूर्ण समाधान दिवस रावर्टसगंज में उप जिलाधिकारी श्री अश्वनी कुमार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, इस मौके पर तहसील में आये शिकायतकर्ताओं की शिकायतों का निस्तारण किया गया, इस दौरान क्षेत्रों में भी टीम भेजकर प्रकरणों का निस्तारण कराया गया और सम्बन्धित को निर्देशित भी किया गया कि इसमें किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाये। अवशेष मामलों को गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया। इस मौके पर उप जिलाधिकारी सदर श्री अश्वनी कुमार, तहसीलदार सदर श्री अमित कुमार आदि ने 35 शिकायतें सुनते हुए, मौके पर ही 04 मामलें निस्तारित किये गये, इस प्रकार तहसील दिवस रावर्टसगंज में कुल 04 मामले निस्तारित हुए, बाकी 31 प्रकरणों को समयबद्ध तरीके से निस्तारित करने के निर्देश सम्बन्धित को दिये गये। 03-सम्पूर्ण समाधान दिवस ओबरा का आयोजन अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 श्री वागीश कुमार शुक्ला की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, इस मौके पर उप जिलाधिकारी ओबरा श्री विवेक कुमार सिंह, तहसीलदार ने शिकायतकर्ता के माध्यम से प्राप्त प्रार्थना-पत्रों का निस्तारण किया गया, इस दौरान अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 श्री वागीश कुमार शुक्ला ने प्रकरणों का निस्तारण कराते हुए सम्बन्धित को निर्देशित भी किया गया कि इसमें किसी प्रकार की शिथिलता न बरती जाये, अवशेष मामलों को गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया। इस मौके पर उप जिलाधिकारी ओबरा श्री विवेक कुमार सिंह व तहसीलदार ओबरा आदि ने 108 शिकायतों को सुनते हुए ,मौके पर ही 09 मामलें निस्तारित किये गये, 03 टीम क्षेत्र में भेज कर टीम द्वारा 03 निस्तारण किया गया, इस प्रकार तहसील दिवस ओबरा में कुल 12 मामले निस्तारित हुए, बाकी 96 प्रकरणों को समयबद्ध तरीके से निस्तारित करने के निर्देश सम्बन्धित को दिये गये। 04-सम्पूर्ण समाधान दिवस घोरावल का आयोजन उप जिलाधिकारी श्री अशीष कुमार त्रिपाठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, इस मौके पर तहसील दिवस में आये शिकायतकर्ताओं की शिकायतों का निस्तारण किया गया अवशेष मामलों को गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया। इस मौके पर उप जिलाधिकारी घोरावल श्री अशीष कुमार त्रिपाठी, तहसीलदार घोरावल आदि ने 86 शिकायतें सुनते हुए, मौके पर ही 06 मामलें निस्तारित किये गये और बाकी 80 प्रार्थना पत्रों को समयबद्ध और गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण के लिए निर्देश सम्बन्धित को दिये गये। चारों तहसीलों में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल शिकायतें-330 प्राप्त हुयी, जिसमें से 33 शिकायतों का निस्तारण टीम भेजकर और मौके पर किया गया।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Enjoy Publicity
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480

क्या डायबिटीज में आम खा सकते हैं,क्या हैं आम के फायदे/नुकसान, जानें हर सवाल का जवाब

नयी दिल्ली। आम को 'फलों का राजा' कहा जाता है। इसके मीठे-रसीले स्वाद और फायदों के कारण इसे यह पहचान मिली है। यह गर्मियों का सुपरफूड है। हालांकि, लोगों में यह कन्फ्यूजन रहता है कि हाई कैलोरी होने के

कारण वेट लॉस के दौरान इसे खाना चाहिए या नहीं। साल 2025 में 'फूड एंड फंक्शन' जर्नल में एक लिटरेचर रिव्यू पब्लिश हुआ। इसके मुताबिक, आम वेट कंट्रोल करने में मददगार होता है। दरअसल, आम खाने से तृप्ति (पेट भरा होने का एहसास) महसूस होती है। 'रिसर्चगेट' के मुताबिक, भारत दुनिया का सबसे बड़ा आम उत्पादक देश है। यहां दुनिया का 41फीसदी आम पैदा होता है। इसलिए आज 'जरूरत की खबर' में जानेंगे कि- आम खाने के क्या फायदे हैं? इसे खाने का सही तरीका क्या है? किन लोगों के आम नहीं खाने चाहिए? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. अनु अग्रवाल, सीनियर क्लीनिकल डाइटीशियन, फाउंडर- 'वनडाइडटुडे' जी के साथ सवाल जवाब के माधयम से। सवाल- आम में कौन-कौन से पोषक तत्व होते हैं? जवाब- 100 ग्राम आम में लगभग 60 कैलोरी होती हैं। इसका ज्यादातर हिस्सा पानी होता है। इसमें प्रोटीन, कार्ब्स और फाइबर भी होता है। इसमें और भी कई न्यूट्रिशन होते हैं, सवाल- क्या आम इम्यूनिटी बढ़ाता है? जवाब- हां,

आम इम्यूनिटी मजबूत करने में कई तरह से मदद करता है।इसमें मौजूद विटामिन सी शरीर के सैनिक यानी 'व्हाइट ब्लड सेल्स' को एक्टिव करता है। इससे शरीर जर्म्स, बैक्टीरिया और वायरस का मजबूती से सामना कर पाता है। विटामिन ए स्किन और म्यूकस लाइनिंग (नाक-गला-आंत) को मजबूत रखता है। इससे जर्म्स स्किन में प्रवेश नहीं कर पाते हैं।सवाल- क्या आम आंखों के लिए फायदेमंद है? जवाब- हां, इसमें विटामिन ए (बीटा-कैरोटीन) भरपूर मात्रा में होता है। पॉइंटर्स से समझिए-यह रेटिना की हेल्थ और नाइट विजन (कम रोशनी में देखने की क्षमता) को सपोर्ट करता है। यह कॉर्निया को हेल्दी रखने में भी मदद करता है। सवाल- क्या आम में एंटीऑक्सिडेंट होते हैं? जवाब- हां, इसमें मैंगिफेरिन, क्वेरसेटिन, कैटेचिन और पॉलीफेनॉल्स जैसे बायोएक्टिव कंपाउंड होते हैं। ये शरीर में बनने वाले फ्री-रेडिकल्स को कम करके ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस से बचाते हैं। कैंसर जैसी घातक बीमारियों से भी बचाते हैं। सवाल- क्या आम स्किन और बालों के लिए अच्छा है?जवाब- हां, इसमें विटामिन सी, विटामिन ए और एंटीऑक्सिडेंट्स भरपूर मात्रा में होते हैं। विटामिन सी कोलेजन प्रोडक्शन में मदद करता है।इससे स्किन की इलास्टिसिटी बनी रहती है और स्किन ज्यादा हेल्दी और ग्लोइंग दिखती है। विटामिन ए स्किन की रिपेयर और ड्राईनेस को कम करने में मदद करते है।इसमें मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स फ्री-रेडिकल डैमेज को कम करके समय से पहले एजिंग के असर (उम्र के साथ चेहर पर होने वाले असर) को धीमा कर सकते हैं।

वहीं बालों की बात करें तो ये पोषक तत्व स्कैल्प हेल्थ को सपोर्ट करते हैं और बालों की जड़ों को मजबूत बनाए रखने में मदद कर सकते हैं। सवाल- क्या आम पाचन सुधारता है? जवाब- हां, इसमें डाइटरी फाइबर होता है। यह बाउल मूवमेंट बढ़ाता है। कब्ज कम करने में मदद करता है। आम में कुछ ऐसे एंजाइम्स भी होते हैं, जो प्रोटीन पचाने में मदद करते हैं। इसमें मौजूद पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स डाइजेस्टिव सिस्टम को सपोर्ट करता है। हालांकि, ज्यादा आम खाने से कुछ लोगों को गैस या भारीपन हो सकता है, इसलिए सीमित मात्रा में खाना चाहिए। सवाल- क्या आम एनर्जी बढ़ाता है? जवाब- हां, शरीर को इंस्टेंट एनर्जी देता है। इसमें नेचुरल शुगर जैसे ग्लूकोज, फ्रुक्टोज और सुक्रोज होते हैं। यह जल्दी पचकर शरीर को एनर्जी देते हैं। सवाल- क्या आम गर्मियों में डिहाइड्रेशन से बचाता है? जवाब- हां, इसमें पानी की मात्रा के साथ इलेक्ट्रोलाइट्स भी होते हैं। यह शरीर में फ्लूइड बैलेंस बनाए रखने में मदद करते हैं। सवाल- क्या डाइटिंग कर रहे लोग आम खा सकते हैं? जवाब- हां, लेकिन संतुलित मात्रा में खाना चाहिए। आम में नेचुरल शुगर होती है। इसलिए ज्यादा मात्रा में खाने से वेट लॉस में समस्या हो सकती है। सवाल- क्या आम वजन घटाने में मददगार है? जवाब- आम सीधे तौर पर वेट लॉस 'फूड' नहीं है, लेकिन यह संतुलित मात्रा में खाया जाए तो वेट कंट्रोल प्लान में शामिल किया जा सकता है। इसमें फाइबर होता है। फाइबर से पेट लंबे समय तक भरा रहता है। इससे भूख कम लगती है और अनहेल्दी स्नैक्स खाने की आदत पर काबू पाया जा सकता है। सवाल- क्या रात में आम खाना सही है? जवाब- नहीं, आम धीरे पचता है। कुछ लोगों में भारीपन, गैस या ब्लड शुगर स्पाइक का कारण बन सकता है। सवाल- क्या एक्सरसाइज के बाद आम खा सकते हैं? जवाब- हां, इसमें मौजूद नेचुरल शुगर (ग्लूकोज और फ्रुक्टोज) वर्कआउट के बाद कम हुई एनर्जी को जल्दी रीफिल करने में मदद करते हैं। इसमें मौजूद पोटेशियम मसल्स रिकवरी और इलेक्ट्रोलाइट बैलेंस में भी मदद करता है।सवाल- क्या डायबिटिक लोग आम खा सकते हैं? जवाब- हां, लेकिन सीमित मात्रा में खाना चाहिए। आम का ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) मीडियम होता है, जिससे ब्लड शुगर बहुत तेजी से नहीं बढ़ता है। डायबिटिक लोग डॉक्टर की सलाह लेकर इसे सीमित मात्रा में खा सकते हैं। सवाल- आम का ग्लाइसेमिक इंडेक्स कितना होता है? जवाब- आम का ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) आमतौर पर मीडियम होता है। सामान्य तौर पर इसका जीआई लगभग 51 से 60 के बीच होता है। यह आम की किस्म, मिठास और मात्रा पर थोड़ा बदल सकता है। सवाल- डायबिटिक लोगों के लिए जूस, शेक और पूरे आम में क्या बेहतर है? जवाब- सबसे सेफ तरीका ये है कि पूरा फल खाएं। दरअसल, इसमें फाइबर होता है, जो शुगर के एब्जॉर्प्शन को धीमा करता है। इससे ब्लड शुगर अचानक नहीं बढ़ता। सवाल- क्या डायबिटिक लोग कच्चा आम खा सकते हैं? जवाब- हां, इसमें शुगर कम और फाइबर ज्यादा होता है। इससे ब्लड शुगर स्पाइक का रिस्क कम होता है। आम से जुड़े कॉमन सवाल-जवाब। सवाल- आम खाने का सही तरीका क्या है? जवाब- सही तरीके से आम खाना सेहत दोनों के लिए फायदेमंद है। सवाल- क्या खाली पेट आम खाना ठीक है? जवाब- हां, खाली पेट आम खाना आमतौर पर नुकसानदायक नहीं है। लेकिन कुछ लोगों का ब्लड शुगर स्पाइक कर सकता है या एसिडिटी हो सकती है। इसलिए बेहतर है कि इसे हल्का नाश्ता करने या भोजन के बाद खाएं। सवाल- क्या आम खाने से पहले भिगोना जरूरी है? जवाब- हां, भिगोने से आम की सतह पर मौजूद कुछ केमिकल अवशेष (जैसे वैक्स या कीटनाशक) कम हो सकते हैं। सवाल- क्या दूध के साथ आम खाना सही है? जवाब- आम और दूध साथ लेना (मिल्कशेक) आमतौर पर सेफ है। यह हाई कैलोरी ड्रिंक है और एनर्जी बूस्ट करती है। लेकिन कुछ लोगों में यह पाचन संबंधी समस्याएं पैदा कर सकती है, क्योंकि दूध और आम दोनों की डाइजेशन स्पीड अलग होती है। सवाल- आम के साथ कौन-सी चीजें नहीं खानी चाहिए? जवाब- गलत फूड कॉम्बिनेशन पाचन को प्रभावित कर सकते हैं। सवाल- क्या ज्यादा आम खाने से गर्मी बढ़ती है? जवाब- आयुर्वेद के मुताबिक, आम की तासीर गर्म होती है। हालांकि, मेडिकल साइंस इसे नहीं मानता है। ज्यादा मात्रा में खाने से डाइजेशन पर दबाव बढ़ सकता है, जसिसे एसिडिटी, मुंह में छाले या गर्मी जैसा एहसास हो सकता है। सवाल- ज्यादा आम खाने से क्या नुकसान होता है? जवाब- आम सेहत के लिए फायदेमंद है, लेकिन इसके कुछ साइड इफेक्ट भी हो सकते हैं। सवाल- क्या आम मुंहासे बढ़ा सकते हैं? जवाब- हां, इसमें मौजूद नेचुरल शुगर और हाई ग्लाइसेमिक लोड कुछ लोगों में हॉर्मोनल बदलाव या सीबम प्रोडक्शन बढ़ाकर एक्ने को ट्रिगर कर सकते हैं। सवाल- क्या इससे ब्लोटिंग या गैस हो सकती है? जवाब- हां, इसमें नेचुरल शुगर और फाइबर होता है।इसके कारण सेंसेटिव डाइजेस्टिव सिस्टम में फर्मेंटेशन से गैस बन सकती है।

प्रज्ञानानंदा नॉर्वे चेस खिताब जीतने वाले पहले भारतीय बने,फाइनल राउंड में जर्मनी के विन्सेंट को हराया

वर्ल्ड नंबर-1 कार्लसन को दो बार मात दी

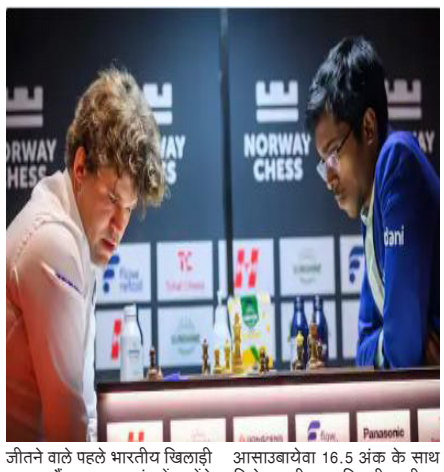

ओस्लो। भारत के युवा ग्रैंडमास्टर आर. प्रज्ञानानंदा ने इतिहास रचते हुए नॉर्वे चेस 2026 का खिताब जीत लिया है। 20 साल के प्रज्ञानानंदा इस टूर्नामेंट को

जीतने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं। फाइनल राउंड में उन्होंने जर्मनी के विन्सेंट कीमर को हराकर यह उपलब्धि हासिल की। टूर्नामेंट के आखिरी दिन प्रज्ञानानंदा 15 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर थे। उन्होंने क्लासिकल मुकाबला जीतकर 3 अंक हासिल किए और कुल 18 अंकों के साथ खिताब अपने नाम कर लिया। नॉर्वे चेस टूर्नामेंट को सबसे ज्यादा 7 बार मैग्नस कार्लसन ने जीता। 2025 में भी वही चैंपियन थे। आखिरी राउंड में पलटी बाजी, वेस्ली टाईब्रेकर जीतने के बावजूद हारे-टूर्नामेंट के आखिरी राउंड में अमेरिकी ग्रैंडमास्टर वेस्ली सो 15.5 अंकों के साथ टॉप पर थे।

लेकिन उनका मुकाबला ड्रॉ रहा और फैसला आर्मगिडन टाईब्रेकर में गया। इससे प्रज्ञानानंदा के लिए खिताब जीतने का रास्ता खुल गया। वेस्ली सो ने टाईब्रेकर तो जीत लिया, लेकिन उन्हें केवल 1.5 अंक मिले। इस तरह उनके कुल 17 अंक हुए, जो प्रज्ञानानंदा से एक कम थे। फ्रांस के अलीरजा फिरोजा 15.5 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रहे। आखिरी दौर में मैग्नस कार्लसन ने गुकेश को हराया, लेकिन वह भी खिताब नहीं जीत सके। कार्लसन 13 अंकों के साथ 5वें स्थान पर रहे।

प्रज्ञानानंदा ने वर्ल्ड नंबर-1 कार्लसन को दो बार हराया-इस टूर्नामेंट के शुरुआती दौर में प्रज्ञानानंदा का प्रदर्शन साधारण रहा, लेकिन बाद के मुकाबलों में उन्होंने शानदार वापसी की।

उनकी सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक वर्ल्ड नंबर-1 और सात बार के नॉर्वे चेस चैंपियन मैग्नस कार्लसन को दो बार क्लासिकल मुकाबलों में हराना रहा। प्रज्ञानानंदा भारत के दूसरे ऐसे खिलाड़ी बने, जिन्होंने एक ही टूर्नामेंट में मैग्नस कार्लसन को दो बार हराया।

इससे पहले 2007 में विश्वनाथन आनंद ने लिनारेस इंटरनेशनल टूर्नामेंट में कार्लसन को लगातार दो मुकाबलों में शिकस्त दी थी।

आनंद और गुकेश भी नहीं जीत सके थे नॉर्वे चेस खिताब-प्रज्ञानानंदा ने वह कर दिखाया जो भारतीय शतरंज के दिग्गज विश्वनाथन आनंद भी नहीं कर पाए थे।

मौजूदा विश्व चैंपियन डी. गुकेश भी अब तक यह टूर्नामेंट नहीं जीत सके हैं। 2013 में शुरू हुए इस टूर्नामेंट में पहली बार किसी भारतीय ने खिताब जीता है। प्रज्ञानानंदा दूसरी बार नॉर्वे चेस में खेल रहे थे। गुकेश 8 अंकों के साथ छठे (आखरी) स्थान पर रहे। महिलाओं में कजाकिस्तान की बिबिसारा जीती-वहीं, महिलाओं में कजाकिस्तान की बिबिसारा आसाउबायेवा 16.5 अंक के साथ विजेता रही। जबकि चीन की झू जिनेर दूसरे और यूक्रेन की अन्नामुजीचुक 15 पॉइंट के साथ तीसरे स्थान पर रही। जबकि भारत की दिव्या देशमुख पांचवे और कोनेरु हम्पी छठे स्थान पर रही। क्या है नॉर्वे चेस का अर्मागेडन फॉर्मेट? नॉर्वे चेस टूर्नामेंट हर साल होने वाले दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित और रोमांचक चेस टूर्नामेंट्स में से एक है। इस साल यह टूर्नामेंट 25 मई से 5 जून 2026 तक पहली बार नॉर्वे की राजधानी, ओस्लो में आयोजित किया गया था।इसमें ओपन और महिला कैटेगरी, दोनों में केवल 6-6 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था, जो आपस में दो-दो बार भिड़े। अगर दो खिलाड़ियों के बीच क्लासिकल मैच ड्रॉ होता है तो फैसला सडन-डेथ (अर्मगिडन) गेम से किया जाता है। इसमें सफेद मोहरों वाले खिलाड़ी को ज्यादा समय मिलता है, लेकिन उसे हर हाल में जीतना होता है। मुकाबला ड्रॉ होने पर काले मोहरों वाले खिलाड़ी को विजेता मानकर एक्स्ट्रा पॉइंट दिया जाता है।

इससे हर दौर में नतीजा निकलना तय होता है। चेस में क्लासिकल फॉर्मेट क्या है? रैपिड, ब्लिट्ज और क्लासिकल ये चेस के फॉर्मेट हैं। क्लासिकल गेम यानी खिलाड़ी को 90 मिनट के अंदर शुरुआती 40 चालें चलनी होती हैं। एक गेम जीतने पर एक अंक मिलता हैं, जबकि ड्रॉ की स्थिति में प्रत्येक खिलाड़ी को आधा अंक दिया जाता है।

2 क्लासिकल गेम के बाद ज्यादा अंक वाले प्लेयर को विजेता घोषित कर दिया जाता है।

2 क्लासिकल गेम के बाद भी बराबर अंक होने पर विजेता का फैसला रैपिड राउंड से होता है। रैपिड राउंड में 15-15 मिनट के चार गेम होते हैं।

इसमें भी हर गेम जीतने पर एक अंक और बराबरी की स्थिति में आधा अंक दिया जाता है।

रैपिड राउंड से भी अगर चैंपियन का फैसला नहीं होता है, तो ब्लिट्ज चेस खेला जाता है। ब्लिट्ज फॉर्मेट में 3-3 मिनट का गेम होता है।

जो खिलाड़ी इसमें जीत हासिल कर लेता है उसे चैंपियन घोषित कर दिया जाता है।

रैपिड फॉर्मेट में प्रत्येक खिलाड़ी को 10 से 60 मिनट के अंदर और ब्लिट्ज में सभी चालें प्रत्येक खिलाड़ी को 10 मिनट या उससे कम के निश्चित समय में पूरी करनी चाहिए।

रोज 6-7 घंटे वीडियो गेम खेलता हूं,जानता हूं ये लत मेरी जिंदगी खराब कर रही है, लेकिन छोड़ नहीं पा रहा, मैं क्या करूं

नयी दिल्ली। आज के समय में स्क्रीन टाइम बढ़ गया हैं सिर्फ कम उम्र लोग ही नहीं हर किसी को मोबाइल से जुडी कोई न कोई लत लग्न आम बात हो गयी हैं इन्ही विषयों को

समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर, जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं 21 साल का कॉलेज स्टूडेंट हूं। पिछले दो साल से ऑनलाइन गेमिंग में बहुत ज्यादा इन्वॉल्व हो गया हूं। शुरू में सिर्फ फन और टाइमपास के लिए खेलता था, लेकिन अब ऐसी लत हो गई है कि रोज 6-7 घंटे गेम खेलता हूं। कई बार पूरी रात जागकर भी। इससे मेरी पढ़ाई पर बुरा असर पड़ा है, मेरे मार्क्स गिर गए हैं और मैं क्लासेस भी मिस करने लगा हूं। इस कारण घरवालों से भी लड़ाई होती रहती है। मैं समझता हूं कि ये गलत है, लेकिन जब गेम नहीं खेलता तो चिड़चिड़ापन महसूस होता है। मेरी सोशल लाइफ भी लगभग खत्म हो गई है। इस लत से बाहर कैसे निकलूं? 21 साल की उम्र में ऑनलाइन गेम खेलना सामान्य बात है, लेकिन जब गेमिंग आपकी पढ़ाई, नींद, रिश्तों और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने लगे तो इसे गंभीरता से लेने की जरूरत है। आपके द्वारा बताए गए संकेत- जैसे रोज 6-7 घंटे गेम खेलना, पूरी रात जागना, पढ़ाई में गिरावट, क्लास मिस करना, परिवार से झगड़े, सोशल लाइफ का खत्म होना और गेम न खेलने पर चिड़चिड़ापन- दर्शाते हैं कि यह सिर्फ मनोरंजन नहीं रह गया है। मनोविज्ञान में इसे प्रॉब्लमैटिक गेमिंग या कुछ मामलों में गेमिंग डिसऑर्डर कहा जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के आईसीडी-11 वर्गीकरण के अनुसार गेमिंग डिसऑर्डर की तीन प्रमुख पहचान हैं– गेमिंग पर नियंत्रण कम होना। पढ़ाई, परिवार, नींद और सामाजिक जिम्मेदारियों की तुलना में गेमिंग को ज्यादा महत्व देना। नुकसान के बावजूद गेमिंग जारी रखना। आपके केस में ये तीनों संकेत दिखाई दे रहे हैं। रोज 6-7 घंटे से ज्यादा खेलना। टाइम पर कंट्रोल खत्म होना। पढ़ाई पर नेगेटिव प्रभाव पड़ना। जरूरी काम छोड़कर गेम खेलना। सोशल लाइफ से कटते जाना। गेम के लिए क्लास बंक करना। नींद खराब होना / रात भर जागना। नुकसान के बावजूद के गेमिंग जारी रखना। साइकोलॉजी क्या कहती है? इन गेम्स को कुछ इस तरह डिजाइन किया जाता है कि वे दिमाग के 'रिवॉर्ड सिस्टम' को एक्टिवेट करें। जब आप कोई लेवल जीतते हैं, कोई मिशन पूरा करते हैं या आपकी रैंक बढ़ती है, तो दिमाग में डोपामिन रिलीज होता है। इससे अच्छा महसूस होता है और दिमाग बार-बार उसी अनुभव को दोहराना चाहता है। इस तरह धीरे-धीरे- गेम खेलने की इच्छा बढ़ती जाती है। पहले जितना मजा पाने के लिए ज्यादा समय खेलना पड़ता है। गेम न खेलने पर बेचैनी महसूस होती है। पढ़ाई, रिश्ते और दूसरी जिम्मेदारियां पीछे छूटने लगते हैं।हमारा ब्रेन और डोपामिन का रिवॉर्ड सर्किट-ऑनलाइन गेमिंग केवल मनोरंजन नहीं है। यह हमारे दिमाग के रिवॉर्ड सिस्टम को भी प्रभावित करती है। हर नई जीत, नया लेवल, बैज, रैंक या टीम की तारीफ दिमाग को एक छोटा-सा इनाम देती है। इस प्रक्रिया में डोपामिन नाम का न्यूरोकेमिकल महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। डोपामिन सिर्फ खुशी महसूस नहीं कराता, बल्कि दिमाग को यह भी सिखाता है कि कौन-सी चीज दोबारा करने लायक है। गेम्स में इनाम जल्दी और बार-बार मिलते हैं। इसलिए दिमाग धीरे-धीरे गेमिंग को एक हाई-रिवॉर्ड गतिविधि के रूप में पहचानने लगता है। मोबाइल की घंटी, गेम का नोटिफिकेशन, ऑनलाइन दोस्तों का मैसेज या 'बस एक और मैच' जैसे संकेत भी गेम खेलने की इच्छा जगाने लगते हैं। समय के साथ दिमाग पढ़ाई, व्यायाम, नींद या परिवार के साथ समय बिताने जैसी सामान्य गतिविधियों से ज्यादा रोमांचक और जरूरी गेमिंग को मानने लगता है। उसे समझ में भी आता है कि ये नुकसानदायक है, लेकिन वो चाहकर भी वो अपनी आदत को कंट्रोल नहीं कर पाता। दूसरे शब्दों में कहें तो इच्छाशक्ति की कमी नहीं होती। दिमाग का रिवॉर्ड सिस्टम ही गेमिंग को असामान्य रूप से ज्यादा महत्व देने लगता है। गेम न खेलने पर चिड़चिड़ापन क्यों होता है? अगर कोई व्यक्ति लंबे समय से रोज घंटों गेम खेल रहा है, तो उसका दिमाग उस लगातार मिलने वाले रोमांच और रिवॉर्ड का आदी हो सकता है। ऐसे में जब अचानक गेमिंग कम कर दी जाए या रोक दी जाए, तो दिमाग को वही उत्तेजना नहीं मिलती, जिसकी उसे आदत पड़ चुकी होती है। नतीजा यह होता है कि व्यक्ति चिड़चिड़ा, बेचैन या उदास महसूस कर सकता है। कुछ लोगों को गुस्सा ज्यादा आता है, किसी काम में मन नहीं लगता या हर समय खालीपन-सा महसूस होता है। अब यहां पर कुछ बातें गौर करने वाली हैं- इसे केवल 'गेम खेलने की जिद' समझना सही नहीं है। यह दिमाग और भावनाओं की एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। ये तब दिखाई देती है, जब कोई व्यक्ति अपनी पसंदीदा गतिविधि से दूर रहने की कोशिश करता है। एक्सपर्ट मानते हैं कि गेम न खेल पाने पर बार-बार चिड़चिड़ापन, बेचैनी या उदासी महसूस होने का मतलब है कि अब गेम सिर्फ मनोरंजन नहीं रह गया है। आप गेम को नहीं, गेम आपको कंट्रोल कर रहा है। इसलिए ऐसे लक्षणों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। क्या गेम आपको कंट्रोल कर रहा है? करें सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट-यहां मैं आपको एक सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट दे रहा हूं। नीचे ग्राफिक्स में कुल 10 सवाल हैं। आपको इन सवालों को 0 से 3 के स्केल पर रेट करना है। जैसेकि पहले सवाल के लिए अगर आपका जवाब 'कभी नहीं' है तो 0 नंबर दें और अगर आपका जवाब 'लगभग रोज' है तो 3 नंबर दें। अंत में अपने टोटल स्कोर की एनालिसिस करें। स्कोर का इंटरप्रिटेशन भी ग्राफिक में दिया है। कॉग्निटिव बिहेवियर थेरेपी (सीबीटी) पर बेस्ड सेल्फ हेल्प प्लान- 1. गेमिंग डायरी बनाएं- अचानक छोड़ने की बजाय ये आदत धीरे-धीरे कम करें। कई लोग एकदम गेम छोड़ने की कोशिश करते हैं और फिर दोबारा उसी पैटर्न में लौट जाते हैं। बेहतरी तरीका ये है कि आप एक गेमिंग डायरी बनाएं। उसमें सात दिनों तक यह लिखें– कब गेम खेला? उससे पहले मनःस्थिति कैसी थी? उस समय मन में क्या विचार आया? गेम खेलने की इच्छा कितनी तीव्र थी? कितनी देर गेम खेला? 2. अपने गेमिंग ट्रिगर्स पहचानें-खुद से ये सवाल पूछेंःमैं कब सबसे ज्यादा गेम खेलता हूं? बोर होने पर? तनाव होने पर? अकेलापन महसूस होने पर? परीक्षा का दबाव महसूस होने पर? पढ़ाई से बचने के लिए? देर रात जागने पर? ऑनलाइन दोस्तों का दबाव में? अक्सर गेमिंग असली समस्या नहीं होती, बल्कि यह किसी भावनात्मक जरूरत को पूरा करने का जरिया बन जाती है। अपने ट्रिगर्स को पहचानने पर पैटर्न को समझने में मदद मिलेगी। ये भी समझ आएगा कि आपका ट्रिगर क्या है। 3. गेमिंग अचानक पूरी तरह बंद न करें-यदि आप रोज 6-7 घंटे गेम खेलते हैं, तो एकदम से बंद करने पर चिड़चिड़ापन बढ़ सकता है। बेहतर होगा कि इसे धीरे-धीरे समय कम किया जाए। पहला सप्ताहः रोज अधिकतम 4 घंटे, रात 11 बजे के बाद गेमिंग नहीं। दूसरा सप्ताहः रोज अधिकतम 3 घंटे, सप्ताह में एक पूरी शाम बिना गेमिंग के। तीसरा सप्ताहः रोज अधिकतम 2 घंटे, पढ़ाई पूरी होने के बाद ही गेमिंग। चौथा सप्ताहः वीक में 60-90 मिनट, वीकेंड में अधिकतम 2 घंटे। 4. इच्छा की लहर को गुजरने दें जब गेम खेलने की तीव्र इच्छा हो, तो तुरंत गेम शुरू न करें। इसकी बजाय ये काम करें- कुछ मिनट गहरी सांस लें। इच्छा की तीव्रता को 0 से 10 के पैमाने पर अंक दें। खुद से कहें, 'यह केवल इच्छा है, कोई आदेश नहीं।' इसके बाद 20 मिनट तक कुछ दूसरे काम करें, जैसे- टहलना, स्नान करना, व्यायाम करना, किसी दोस्त से बात करना, नोट्स व्यवस्थित करना-अक्सर यह तीव्र इच्छा 15-30 मिनट में अपने-आप कम होने लगती है। 5. अपने विचारों को चुनौती दें-फीलिंगः 'बस एक गेम खेलूंगा।' विचारः 'मेरे लिए एक गेम अक्सर तीन घंटे में बदल जाता है।' फीलिंगः 'मेरा मूड खराब है।' विचारः 'पहले टहलता हूं, किसी से बात करता हूं या कुछ खा लेता हूं, फिर फैसला करूंगा।' फीलिंगः 'मैं वैसे भी पढ़ाई में पीछे हूं।' विचारः '30 मिनट की पढ़ाई भी शून्य से बेहतर है।' फीलिंगः 'दोस्त इंतजार कर रहे हैं।' विचारः 'मेरी पढ़ाई और भविष्य की जिम्मेदारी मेरी है।' 6. खाली समय को रिप्लेस करें-सिर्फ गेम हटाने, कम करने से काम नहीं चलेगा। आखिर दिमाग को दूसरा रिवॉर्ड चाहिए। इसलिए गेम की जगह कुछ दूसरे ऐसे काम करें, जिससे रिवार्ड भी मिले और नुकसान भी न हो। जैसे- जिम जाएं। स्पोर्ट्स खेलें। दोस्तों से मिलें। नई स्किल सीखें। म्यूजिक या क्रिएटिव हॉबी अपनाएं। 7. माहौल में बदलाव करें- गेमिंग से जुड़े नोटिफिकेशन बंद करें। रात में मोबाइल या लैपटॉप बेडरूम से बाहर रखें। इंटरनेट के लिए समय-सीमा तय करें। पढ़ाई और गेमिंग की जगह अलग रखें। परीक्षा के दौरान पासवर्ड किसी विश्वसनीय व्यक्ति के पास रख सकते हैं। 8. वास्तविक जीवन के पुरस्कार वापस लाएं-गेमिंग कम करने से शुरुआत में खालीपन महसूस हो सकता है। इसलिए जीवन में दूसरी सकारात्मक गतिविधियों को शामिल करना जरूरी है। जैसे रोज कम-से-कम– पढ़ाई के दो 45 मिनट के सत्र। 20 मिनट का व्यायाम या पैदल चलना। किसी व्यक्ति से आमने-सामने बातचीत। तय समय पर सोना। कोई ऐसी गतिविधि जो स्क्रीन से जुड़ी न हो। 9. परिवार को सहयोगी बनाएं-अपनी यात्रा में परिवार की मदद लें और घरवालों से खुलकर बात करें। उनसे कहें– मुझे लग रहा है कि मैं जरूरत से ज्यादा गेम खेल रहा हूं। मैं इस आदत को कम करना चाहता हूं। मुझे डांट या गुस्से से ज्यादा मदद की जरूरत है। मैं गेमिंग कम करने की कोशिश कर रहा हूं। आप मुझे मेरे तय नियम याद दिला सकते हैं। रात में इंटरनेट बंद रखने में मदद कर सकते हैं। हर हफ्ते मेरी प्रोग्रेस पूछ सकते हैं। अगर मैं गलती करूं, तो मुझे जज करने के बजाय दोबारा कोशिश करने के लिए प्रोत्साहित करें।क्या दवाइयों से मदद मिलती है? फिलहाल गेमिंग डिसऑर्डर के लिए कोई विशेष स्वीकृत दवा उपलब्ध नहीं है।

इसके मुख्य ट्रीटमेंट में ये चीजें शामिल हैं– कॉग्निटिव बिहेवियर थेरेपी, स्लीप क्वालिटी में सुधार, रूटीन को रेगुलर करना, परिवार की मदद और सपोर्ट वास्तविक जीवन की गतिविधियों और उपलब्धियों को बढ़ाना। यदि साथ में अवसाद, चिंता या ध्यान संबंधी समस्या मौजूद हो, तो मनोचिकित्सक स्थिति के अनुसार दवाओं पर विचार कर सकते हैं। लेकिन दवाएं कोई त्वरित समाधान नहीं हैं और इन्हें केवल विशेषज्ञ की सलाह पर ही लिया जाना चाहिए। अंतिम बात-यह एक गंभीर समस्या है, लेकिन इससे बाहर निकलना पूरी तरह संभव है। यहां हमारा मकसद खुद को दोष देना नहीं है, बल्कि दोबारा अपने जीवन पर कंट्रोल हासिल करना है। गहरी इच्छा शक्ति और थोड़ी मेहनत से आप ये काम कर सकते हैं।

नेहा कक्कड़ हो गई 38 की, समोसे बेचते थे पिता,4 साल में जगराता गाया, छोटे से कमरे में रहीं, वैन में सोईं

मुंबई। नेहा कक्कड़ का जन्म ऋषिकेश के बेहद गरीब परिवार में हुआ। तीन भाई-बहनों में नेहा सबसे छोटी थीं। सोनू कक्कड़ (सिंगर) और टोनी कक्कड़ (सिंगर-कंपोजर) उनसे बड़े थे। पिता के पास गुजारे के लिए कोई पक्की नौकरी नहीं थी। वो पत्नी निती कक्कड़ और 3 बच्चों के साथ ऋषिकेश के एक 10 बाय 10 के किराए के कमरे में रहते थे। गरीबी का वो आलम था कि घर में किचन तक नहीं था। मां उसी कमरे में एक टेबल रखकर उस पर खाना पकातीं। उसी कमरे में सब उठते-बैठते, सोते, खेलते। नेहा महज 4 साल की थीं, जब पिता रोजी-रोटी की तलाश में दिल्ली शिफ्ट हो गए। वो एक छोटे से स्कूल के बाहर समोसे बेचने लगे। बड़ी बहन सोनू उसी स्कूल में पढ़ती थीं। स्कूल में पिता के काम के चलते उनका जमकर मजाक बनाया जाता था, जिससे वो काफी रोती थीं। परिवार का गुजारा मुश्किल होने लगा, तो पिता ने बड़ी बेटी सोनू कक्कड़ के साथ जगराते में गाना शुरू कर दिया। पिता को लिखने का शौक था, तो वो खुद जगराते के लिए गाने लिखा करते थे। समय के साथ भाई टोनी और फिर 4 साल की उम्र में नेहा ने भी पिता की आर्थिक मदद करने के लिए जगराते में गाना शुरू कर दिया। पूरा परिवार रिक्शे से जगराता करने जाता था। हर जगराते के उन्हें 500 रुपए तक मिलने लगे और घर के हालात भी बेहतर हो गए। समय के साथ पिता ने ट्रेवलिंग के लिए एक वैन ले ली। जब भी कभी रातभर जगराता होता, तो पिता वैन के पीछे वाली सीट खोलकर वहीं बच्चों के लिए गद्दे बिछा देते थे, जिससे बच्चों को आराम मिल सके। कभी चंद रुपयों के लिए अपना बचपन खोने वालीं नेहा कक्कड़ 38 साल की हो चुकी हैं और सिंगिंग स्टार हैं। नेहा के बर्थडे के खास मौके पर एक नजर उनकी जिंदगी की प्रेरणादायक कहानी पर-इंडियन आइडल के एक एपिसोड में बचपन के दिनों को याद कर नेहा ने कहा था-'मैंने 4 साल की उम्र में गाना शुरू किया। उस समय कोई टाइम लिमिट नहीं होती थी। जगराते कभी-कभी रात से शुरू होकर सुबह तक चलते थे और हम लगातार गाते थे। लोग हमारी तारीफ तक नहीं करते थे, कई बार तो ऐसा भी हुआ, जब हम रातभर गाने के चलते स्कूल नहीं जा सके।' झगड़े में भाई की जांघ में मारा पैन- नेहा कक्कड़, भले ही पढ़ाई से दूर रहीं, लेकिन शरारत में अव्वल थीं। सोनू उनसे बड़ी थीं, लेकिन टोनी से उम्र का फासला कम होने पर दोनों खूब झगड़ते थे। कपिल शर्मा शो में आए कक्कड़ भाई-बहनों ने बताया कि एक बहस के बाद नेहा ने भाई टोनी की जांघों पर पैन से ऐसा हमला किया कि आधा पैन उनकी जांघ में घुस गया था। 5 साल की उम्र में बड़ों को टक्कर देकर जीता म्यूजिक कॉम्पिटिशन- नेहा कक्कड़ ने महज 5 साल की उम्र में ऋषिकेश में होने वाले एक म्यूजिकल कॉन्टेस्ट में हिस्सा लिया। उस कॉम्पिटिशन में कोई एज लिमिट नहीं थी, तो 5 साल की नेहा को 16-17 और उससे भी बड़े लोगों के साथ कंपीट करना पड़ा। नन्ही सी नेहा ने तब नई-नई आई फिल्म फूल और कांटे का गाना मैंने प्यार तुम्ही से किया है गाया था। नेहा ने अपनी मधुर आवाज से बड़ों को न सिर्फ कड़ी टक्कर दी, बल्कि वो कॉम्पिटिशन भी जीता। आगे वो शादियों और इवेंट में भी गाने लगीं। एक बार नेहा-सोनू को एक बड़े जागरण में गाने का मौका मिला, जिसमें उनसे ठीक पहले आशा भोसले ने परफॉर्मेंस दी थी। रिश्तेदार-पड़ोसियों ने बच्चों से गाना गंवाने पर दिए ताने-समय के साथ नेहा-सोनू को भजन संध्या और जगराता के काफी काम मिलने लगे। वो दिल्ली, ऋषिकेश के अलावा भी चंडीगढ़ समेत नॉर्थ के कई शहरों में परफॉर्म करने जाती थीं, जिससे उनकी पढ़ाई ठीक तरह नहीं हो पाती थी। बच्चों की कमाई से ही एक समय घर चलने लगा, जिसके चलते आस-पड़ोस के लोग और रिश्तेदार उनके पेरेंट्स को काफी ताने देते थे। सोनू कक्कड़ को रियलिटी शो के बाद मिला था 'बाबू जी जरा धीरे चलो' गाना- दिल्ली में गायिकी में मजबूत पकड़ बनाने के बाद बड़ी बहन सोनू कक्कड़ ने 2003 में मुंबई के सिंगिंग रियलिटी शो पॉपस्टार जीता। उस शो के जज संदीप चौटा को सोनू की आवाज इतनी पसंद आई कि उन्होंने शो खत्म होते ही उन्हें ऑफिस बुलाकर, फिल्म 'दम' का गाना 'बाबू जी जरा धीरे चलोष्ठ,' ऑफर कर दिया। कम समय में ही सोनू ने म्यूजिक इंडस्ट्री में मजबूत पकड़ बनाते हुए कई हिट गाने दिए। 16 साल की उम्र में भाई के साथ पहुंचीं मुंबई-सोनू की बढ़ती पॉपुलैरिटी के बीच ही नेहा कक्कड़ 16 साल की उम्र में भाई टोनी के साथ म्यूजिक में करियर बनाने के लिए मुंबई आ गईं। टोनी कक्कड़ को कंपोजिशन का शौक था, तो वो कंपोजर संदीप चौटा के साथ बतौर लिरिसिस्ट (गीतकार) का काम सीखने लगे, वहीं नेहा कई सिंगिंग रियलिटी शोज में ऑडिशन दिया करती थीं। तब वो 11वीं क्लास में थीं। एक साल के लंबे संघर्ष के बाद उनका इंडियन आइडल सीजन 2 में सिलेक्शन हुआ। ऑडिशन में जज रहे सोनू निगम ने नेहा से कहा कि उनकी आवाज फंसी-फंसी लग रही है। हालांकि थोड़ी देर उन्हें परेशान करने के बाद वो गोल्डन वर्ल्ड कहे गए, 'आप मुंबई आ रही हैं।' शो में नेहा ने कहा था कि वो इंडियन आइडन-1 के विनर अभिजीत सावंत जितनी फेमस होना चाहती हैं। नेहा की जर्नी शानदार रही, लेकिन वो 10वें नंबर पर शो से बाहर हो गईं। हालांकि अब नेहा कक्कड़ हुनर और मेहनत की बदौलत खुद इंडियन आइडन की पसंदीदा जजेस में से एक हैं। इंडियन आइडल 2 के विजेता संदीप आचार्य रहे, जिनका 2013 में महज 29 साल की उम्र में पीलिया से निधन हो गया। इंडियन आइडन हारने के बावजूद नेहा ने हार नहीं मानी और खुद अपनी म्यूजिल एल्बम 'नेहाः द रॉकस्टार' रिलीज किया। ये एल्बम हिट रहा और आगे नेहा ने रोमियो जूलिएट म्यूजिक एल्बम बनाया, जिसे उनके भाई टोनी कक्कड़ ने कंपोज किया। एल्बम हिट होने के बाद नेहा को 'मीराबाई नॉट आउट' (2010) में नजर आ चुकी हैं। उन्होंने कॉमेडी सर्कस के तानसेन में कपिल शर्मा और अली असगर के साथ काम किया। वो कई कन्नड़ और तेलुगु गानों में भी नजर आई हैं। 2009 में नेहा कक्कड़ ने टीवी शो 'ना आना इस देश लाडो' के टाइटल सॉन्ग को आवाज दी, जिससे उन्हें काफी पहचान मिली थी। नेहा कक्कड़ ने कन्नड़ फिल्म 'थमास्सू' के गाने 'नोडू बारे' को आवाज दी, जिसके लिए उन्हें साउथ फिल्मफेयर अवॉर्ड में बेस्ट फीमेल प्लेबैक सिंगर का

नॉमिनेशन मिला था। दीपिका की फिल्म से नेहा को मिला बड़ा सिंगिंग ब्रेक-नेहा कक्कड़ को 2012 की फिल्म कॉकटेल के गाने सेकेंड हैंड जवानी से बड़ा ब्रेक मिला। गाना हिट रहा और नेहा कक्कड़ ने इंडस्ट्री में पहचान बना ली और एक-एक कर कई हिट गाने दिए।

कई विवादों के नाम रहा नेहा का सिंगिंग करियर- प्राग गाने पर अश्लीलता के आरोप- साल 2013 में नेहा कक्कड़ ने फिल्म प्राग के गाने बोतल खोल को आवाज दी। अश्लील और डबल मीनिंग लिरिक्स के चलते सेंसर बोर्ड ने इस पर परफॉर्म करने वाला वीडियो वायरल हुआ। इस पर सोशल मीडिया दो हिस्सों में बंट गया, कुछ लोगों ने इसे मनोरंजन माना, जबकि अन्य ने इसे अनावश्यक और भड़काऊ बताया। रियलिटी शो में भावुक होने पर ट्रोलिंग- नेहा सालों से सिंगिंग रियलिटी शो इंडियन आइडन की जज हैं। कई एपिसोड में नेहा भावुक होकर रोती दिखाई दीं। कुछ दर्शकों ने इसे वास्तविक भावना माना, जबकि कुछ ने इसे 'ओवरड्रामेटिक' कहकर ट्रोल किया। रीमिक्स गानों को लेकर आलोचना- नेहा ने कई पुराने पॉपुलर गानों के रीमिक्स गाए हैं। जिनमें कांटा लगा, छम्मा छम्मा और टिप टिप बरसा पानी जैसे दर्जनों गाने शामिल हैं। रिमिक्स गानों पर नेहा की जमकर ट्रोलिंग होती है। 2022 में नेहा ने फाल्गुनी पाठक के गाने मैंने पायल हैं छनकाई गाया, जिस पर ऑरिजिनल सिंगर ने न सिर्फ इसकी जमकर आलोचना की, बल्कि इसे म्यूजिक के इतिहास के लिए हानिकारक कहा। रिलेशनशिप, ब्रेकअप, डिप्रेशन और शादी- नेशनल टेलीविजन में रिश्ता किया ऑफिशियल, फिर अचानक हुआ ब्रेकअप- नेहा कक्कड़ साल 2014 से एक्टर हिमांश कोहली के साथ रिलेशनशिप में थीं। दोनों की मुलाकात फिल्म यारियां की शूटिंग के दौरान हुई।

हिमांश फिल्म के हीरो थे और नेहा ने फिल्म के गाने आज ब्लू है पानी-पानी को आवाज दी थी। दोनों ने 2018 में रियलिटी शो इंडियन आइडल में नेशनल टेलीविजन पर रिश्ता ऑफिशियल किया और ये भी ऐलान किया कि वो जल्द ही शादी करेंगे। हालांकि 3 महीने बाद ही अचानक नेहा ने हिमांश से ब्रेकअप कर इसकी घोषणा सोशल मीडिया पर कर दी। ब्रेकअप के बाद डिप्रेशन में रहीं नेहा कक्कड़- ब्रेकअप के कुछ समय बाद नेहा कक्कड़ कई मौकों पर गाने सुनकर इंडियन आइडल के सेट पर रोती दिखीं। जनवरी 2019 में नेहा ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में एक कॉन्सर्ट में नेहा कथित रूप से 2 घंटे की देरी से पहुंचीं। दर्शकों ने नाराजगी जताई और सोशल मीडिया पर उनकी आलोचना हुई। नेहा और उनके भाई टोनी कक्कड़ ने आयोजन की खराब व्यवस्थाओं को जिम्मेदार बताया, जबकि आयोजकों ने उल्टा नेहा की टीम पर गैर-पेशेवर व्यवहार के आरोप लगाए और मुआवजे की मांग की। 'कैंडी शॉप/लॉलीपॉप' गाने पर अश्लीलता का आरोप- नेहा और कक्कड़ ने ऑफिशियल इंस्टाग्राम से डिप्रेशन की बात कबूली और कहा कि वो जिंदगी के सबसे मुश्किल समय से गुजर रही हैं और डिप्रेशन में हैं। उन्हें एंग्जाइटी की समस्या भी रही। नशे में किया था शो के कंटेस्टेंट रोहनप्रीत ने शादी के लिए प्रपोज- नेहा कक्कड़ ने 2020 में रोहनप्रीत से शादी की थी। दरअसल, रोहनप्रीत, 2018 में सिंगिग रियलिटी शो राइजिंग स्टार के कंटेस्टेंट थे। वो शो के रनर-अप भी रहे। इसके बाद एक गाने की शूटिंग के समय रोहनप्रीत को नेहा पसंद आ गईं। उन्होंने नेहा की स्नैपचैट आइडी मांगी और दोनों के बीच बातचीत शुरू हो गई। एक दिन रोहनप्रीत ने हिम्मत कर उन्हें प्रपोज कर दिया, लेकिन नेहा ने ये कहते हुए साफ इनकार कर दिया कि वो किसी रिलेशनशिप में नहीं आना चाहतीं, उनका फोकस शादी की तरफ है। रोहन महज 25 साल के थे और वो शादी के लिए तैयार नहीं थे। आखिरकार, बात नहीं बनी। रोहनप्रीत से उनकी बातचीत बंद हो गई। फिर कुछ महीनों बाद एक दिन रोहनप्रीत ने नशे में नेहा को कॉल कर कहा कि वो उनके बिना नहीं रह सके। उन्हें जल्द ही शादी कर लेनी चाहिए। नेहा को लगा कि वो नशे में कुछ भी कह रहे हैं, अगले दिन भूल जाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। रोहन उनसे मिलने आए और फिर शादी का प्रस्ताव दिया। शादी को समझा गया पब्लिसिटी स्टंट-नेहा की शादी की खबरों के बीच उनके गाने नेहू द व्याह अनाउंस हुआ। तब हर किसी का मानना था कि शादी की खबरें महज पब्लिसिटी स्टंट हैं। हालांकि सॉन्ग रिलीज के दिन ही नेहा कक्कड़ ने शादी कर ली। जैसे शादी से पहले नेहा ने गाना अनाउंस किया, ठीक वैसे ही शादी के चंद महीने बाद नेहा ने एक और गाना अनाउंस किया, जिसमें वो बेबी बंप के साथ नजर आई। हर किसी को लगा कि वो प्रेग्नेंट हैं, जिसके लिए एक और गाना बना है, हालांकि बाद में सिंगर ने साफ किया, ये गेटअप महज गाने के लिए है। अप्रैल 2025 में सोनू कक्कड़ ने आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट से पोस्ट शेयर कर नेहा और टोनी से रिश्ता खत्म करने की घोषणा कर दी। इसके बाद से ही सोनू परिवार के सभी इवेंट से नदारद दिखीं। 2026 की शुरुआत में नेहा कक्कड़ ने भी पोस्ट शेयर कर कहा कि वो सभी रिश्तों से ब्रेक ले रही हैं। इसके बाद से ही उनके तलाक की खबरें सुर्खियों में आ गईं। चर्चा इतनी बढ़ी कि नेहा ने खुद इस पर सफाई देते हुए अपील की कि उनके बयान में पति और परिवार को न घसीटा जाए।

त्विशा से समर्थ ने पूछा था-प्रेग्नेंट कैसे हो सकती हो? यह किसका बच्चा है- सीबीआई जांच का फोकस 'प्रेग्नेंसी' टर्मिनेट करने के विवाद पर

भोपाल। एक्ट्रेस त्विशा शर्मा की संदिग्ध मौत की जांच कर रही सीबीआई का फोकस अब 'प्रेग्नेंसी' के इर्द-गिर्द घूम रहा है। अब तक की पूछताछ और डिजिटल एविडेंस से यह साफ हो गया है कि समर्थ और त्विशा के बीच झगड़े की जड़ प्रेग्नेंसी थी। समर्थ ने त्विशा से पूछा था कि तुम प्रेग्नेंट कैसे हो सकती हो? यह किसका बच्चा है? त्विशा की सास गिरिबाला सिंह ने न्यायिक हिरासत से पहले मीडिया को बताया था कि प्रेग्नेंसी बेटे और बहू के बीच का मामला है। उन्होंने यह जरूर बताया कि त्विशा और समर्थ ने आपसी सहमति से 30 अप्रैल को प्रेग्नेंसी टर्मिनेट कराई थी। इसके बाद त्विशा मानसिक रूप से परेशान रहने लगी थी। सास गिरिबाला सिंह बेटे समर्थ के साथ त्विशा को भोपाल के एक बड़े साइकेट्रिस्ट के पास भी ले गई थीं। यानी त्विशा की मौत का रहस्य प्रेग्नेंसी के साथ जुड़ा हो सकता है, इस एंगल पर सीबीआई की टीम जांच कर रही है। सीबीआई को अब तक पोस्टमॉर्टम के बाद सुरक्षित रखे गए त्विशा के गर्भाशय की हिस्टोपैथोलॉजी रिपोर्ट नहीं मिली है। यही वजह है कि सीबीआई अब भी सेकेंड पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट परिजन को देने से बच रही है। सीबीआई अधिकारी मौत से जुड़े सबूतों की कड़ियां जोड़ने के लिए फोरेंसिक रिपोर्ट, मोबाइल चैट्स और आरोपियों के बयानों का मिलान कर रहे हैं। सीबीआई सूत्रों के मुताबिक, मामले के कई अहम पहलुओं की पड़ताल पूरी हो चुकी है। अब एजेंसी फॉरेंसिक रिपोर्ट और विशेषज्ञों की राय के आधार पर घटनाक्रम की अंतिम कड़ियां जोड़ने में जुटी है। इस केस में सीबीआई को त्विशा और उसकी मां के बीच हुई चैटिंग भी मिली है, जिसमें त्विशा ने कहा था कि समर्थ मुझसे पूछ रहा है कि किसका बच्चा है? मैं उसकी बातों को कैसे इग्नोर करूं? समर्थ ने सीबीआई को बताया है कि प्रेग्नेंसी को लेकर त्विशा और उसके बीच सब कुछ सामान्य नहीं था। उसने त्विशा के किसी दोस्त के बारे में भी सीबीआई को जानकारी दी है। त्विशा के बारे में उसने बताया कि उसका बहुत जल्दी मूड स्विंग होता था। कभी किसी बात पर राजी होती थी, तो कभी उसी बात पर नाराज हो जाती थी। गिरिबाला ने कहा था- प्रेग्नेंसी की खबर से खुश थे हम- गिरिबाला ने अपने बयान में बताया था कि प्रेग्नेंसी की खबर से हम तो खुश थे, लेकिन त्विशा खुद बच्चा नहीं चाहती थी। उसे लगता था कि बच्चे का जन्म उसके कॅरियर में दिक्कत बनेगा। सीबीआई को पूछताछ में समर्थ ने यह भी बताया है कि शादी के छह महीने में त्विशा पांच बार दिल्ली और अजमेर गई थी। अजमेर में त्विशा के भाई की पोस्टिंग है। 30 अप्रैल को प्रेग्नेंसी टर्मिनेशन के बाद भी त्विशा अपने माता-पिता के पास दिल्ली गई थी। इसके कुछ दिनों बाद वह भोपाल लौटी थी। डॉक्टर बताएंगे- त्विशा क्यों डिप्रेशन में थी ? सीबीआई जल्द ही उस डॉक्टर के भी बयान दर्ज करेगी, जिसके पास त्विशा के डिप्रेशन का इलाज चला था। सीबीआई डॉक्टर से यह जानना चाहती है कि मरीज ने उन्हें क्या-क्या परेशानियां बताई थीं? प्रेग्नेंसी टर्मिनेट करने का फैसला क्यों किया गया?क्या प्रेग्नेंसी टर्मिनेशन ही त्विशा के डिप्रेशन की असल वजह थी? डॉक्टर के जवाबों के बाद सीबीआई त्विशा के चैट्स, त्विशा की मां रेखा शर्मा के बयान और समर्थ के बयानों को क्रॉस-चेक कर किसी निष्कर्ष पर पहुंचेगी। ब्यूटी पार्लर, इवनिंग वॉक और सीसीटीवी की कड़ियां- सीबीआई इस मामले में साइकेट्रिस्ट से भी राय ले रही है। वजह यह है कि त्विशा 12 मई को दोपहर 3 बजे ब्यूटी पार्लर गई थी। उसने हेड मसाज लिया था और शाम 6:15 बजे लौटी थी। इसके बाद वह इवनिंग वॉक पर गई। छत पर जाने से पहले उसके हाथ में हेडफोन था। सीबीआई ने सीसीटीवी फुटेज भी देख लिए हैं।

हालांकि इनमें ऊपर क्या हुआ, यह नजर नहीं आता। फुटेज में सिर्फ त्विशा को सीढ़ियों से उतारते और उसे सीपीआर देते हुए देखा जा सकता है। जल्द चार्जशीट दाखिल करने की तैयारी में है सीबीआई- सीबीआई के चार इमली स्थित दफ्तर में दिल्ली ब्रांच के अधिकारी इस केस से जुड़े अलग-अलग पहलुओं की विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर रहे हैं। हिस्टोपैथोलॉजी सहित कुछ अन्य रिपोर्ट अभी मिलनी बाकी हैं।

सीबीआई सूत्रों ने बताया कि इस केस के सबूतों की कड़ियां लगभग तैयार हैं। फोरेंसिक एविडेंस पर काम चल रहा है।

अगले दो महीने में इस केस की चार्जशीट दाखिल कर दी जाएगी।

इनकी डिग्री का क्या आचार डालूं,नए रियलिटी शो के प्रोमो में अनिल कपूर बोले- यहां रट्टू तोतों की नहीं चलेगा

मुंबई। अनिल कपूर ने 'बिग बॉस ओटीटी 3' होस्ट करने के बाद अब एक नए रियलिटी शो 'इंडिया के टॉप 1फीसदी' का ऐलान किया है। मेकर्स का अभी ऐलान नहीं किया गया है। प्रोमो के लास्ट में अनिल कपूर अपने गाने 'माई नेम इज लखन' पर डांस करते नजर आते हैं। इस दौरान एक व्यक्ति उनसे कहता है, 'सर, आधार कार्ड में तो अनिल कपूर नाम है।' इस पर अनिल कपूर जवाब देते हैं, 'ज्यादा फ्री मत बन, कल मुझसे मिल।' अनिल कपूर फिल्म 'अल्फा' में नजर आएंगे-वर्कफ्रंट की बात करें तो अनिल कपूर जल्द वाईआरएफ स्पाई यूनिवर्स की सातवीं फिल्म 'अल्फा' में एक अहम भूमिका निभाते हुए नजर आएंगे। यह फिल्म 3 जुलाई 2026 को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी। वहीं, एक्टर फिल्म शाहरुख खान की 'किंग' में भी दिखाई देंगे। वहीं, अनिल कपूर आखिरी बार फिल्म 'सूबेदार' में पूर्व सैनिक अर्जुन मौर्य के रोल में नजर आए थे। फिल्म 5 मार्च को अमेजन प्राइम वीडियो पर रिलीज हुई है। शाहरुख खान ने फिल्म 'सूबेदार' की तारीफ करते हुए उन्होंने अनिल कपूर के अभिनय को शानदार बताया था। एक्टर ने एक्स पर पोस्ट शेयर करते हुए लिखा था, 'सूबेदार पूरी तरह से एंजॉय की। पर हमेशा भरोसा किया जा सकता है कि वे हर रोल में अपना पूरा दम लगा देते हैं। उनका शांत लेकिन प्रभावी अभिनय प्रेरणादायक है और एक्शन भी बहुत शानदार है। आदित्य रावल, सौरभ शुक्ला, मोना सिंह, फैजल मलिक, राधिका मदान, हर किरदार को अलग-अलग स्टाइल में बनाया गया है और आप सभी ने शानदार काम किया है। सुरेश त्रिवेणी और पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई और ढेर सारा प्यार।'

स्वत्वाधिकारी
प्रकाशक एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि.
1- मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं एम2ए/25 एडीए कालोनी नैनी प्रयागराज 211008 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक
डॉ.दीपक अरोरा
मो 0 न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
website:www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।